











SRI RAMA RISHNA ASHRAM  
LIBRARY SRINAGAR  
Accession No. 3639  
Date

کرشن لیلیا





جملہ حقوق بحق مصنف محفوظ

- ۱۔ ٹائٹل کُرشن لپلا
- ۲۔ صفہ ۱۹۲
- ۳۔ عکس جنوری ۱۹۸۲ء
- ۴۔ کاتب مصنف
- ۵۔ آرٹ تہ حاشیہ ( // )

۷۔ مول (شیٹھ روپیہ) -/60 Rs.

۸۔ چھاپ خانہ :-

کھٹا-لیلا

پرنٹر اینڈ پبلشر :-

فاضل کشمیری

ساکنہ گلشن نگر - چھاپہ پورہ - سرنگ

کشمیر ۱۹۰۱۵



सुरगिह श्रुति माया वन्ती बतरा  
 की स्मृति में समर्पित  
 (मुसुफ)

स्वर्गीया  
 श्रीमती मायावन्ती बतरा  
 की  
 पुण्य स्मृति में  
 समर्पित

फाजिल कश्मीरो







ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



## नूरुक् आयि

वनोवुम पान मोरलो सोज् बोरमस

मेच्युव ओसुस त अंग अग साज् कोरमस

वोजुस यस निश छलिथ छ'न्यमस कदूरथ

तुलिथ जंगार' नूरुक् आयि पोरमस

नोट : नूरुक् आयि :— (सूरए नूरुक् आयि,

सूरए नूर छु कुरानिमजीदुक अख सूरए शरीफ)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मक्षयमश्नुते ॥२१॥ दुःखेष्वनुद्विगमनाः सुखेषु विगतस्पृहः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्प्राप्य शुभाशुभं  
२१/५



## حرفِ اول

قومی بھائی چارہ کی لگن برقرار رکھنے کے سلسلہ میں یہ کتاب  
 کرشن لیبلا میری تیسری ادبی کوشش ہے۔ اسے تخلیق کرنے اور  
 شایانِ شان تعمیر کرنے میں مجھے ایشور اللہ کی ہمہ گیر بخشش شامل حال  
 رہی جو میرے نصیب کے کارن ہے۔ مجھے اس کتاب کی ترمیم  
 (Decoration) اور کتبتِ خود کرنے میں دلی مسرت حاصل ہے۔

زیرِ نظر کتاب "کرشن لیبلا" کی تکمیل میں مجھے محترمہ  
 ڈاکٹر جگت موہنی صاحبہ، پروفیسرِ حمین لال جی سپرو اور پُندت  
 مسایل کاشمیری صاحبانے تعاون دیا، اور گنیش مندر پر بندھا  
 سمتی سرنگر اور سنا تن دھرم پرنٹاپ بھاسرنگر نے مالی امداد  
 دی۔ میں نے رسالہ کلیان اور اسکان بکس کلیفورنیا سے  
 کافی فائدہ اٹھایا۔ میں ان کا دل کی گہرائیوں سے مشکور ہوں۔

اس کتاب میں جتنے بھی اندراجات ہیں، مجھے ان کی چند خامیوں

## \* दो शब्द \*

कौमी भाईचारे की लगन बरकरार रखने के सिलसिले में यह किताब “कृष्ण लीला” मेरी तीसरी अदबी कोशिश है। इसे तखलीक करने और शायानि-शान तामीर करने में मुझे ईश्वर-अल्लाह की हमांगीर बख्शिश शामिल-इ-हाल रही जो मेरे नसीब के कारण है — मुझे इस किताब की तजईन (Decor-oration) और किताबत खुद करने में दिल्ली मस्सरत हासिल है।

जैर-इ नजर किताब की तकमील के दौरान मुझे जिन कृष्ण-भक्तों ने अपना ताऊन दिया उनके अस्माएगरामी इस तरह से हैं — श्री धर्मवीर बतरा डा० जगत मोहिनी साहिबा, प्रोफेसर चमनलाल सप्रू, साहिब और पण्डित पृथ्वी नाथ कोल “साइल-कश्मीरी” और जिन रसाईल से मैंने इस्तिफादा किया उनमें “कल्याण” गोरखपुर का नायाब खसूसी “भागतङ्क”, और Iscon Books, California, काबिलि जिक्र हैं।

इस किताब में जितने भी इन्दराजात हैं, मुझे उनकी चन्द खामियों की तरफ इशारा



کی طرف اشارہ کرنے میں کوئی جھجک محسوس نہیں ہوتی۔ میں نے بنیادی  
 نور پر ایک مسلمان گھرانے میں جنم لیا، اور اپنی تعلیم و تربیت کے دس اوّلیٰ  
 سال اسلامیہ سکولوں میں گزرا۔ اُسے ہیں اور اردو، عربی اور فارسی  
 کے ماہرین اساتذہ علماء وقت سے زبان و خیالات کی چاشنی  
 کا نقشہ اُتار ہے۔ اس لئے میری کرشن لیلّاؤں میں مذکورہ علوم کے ذخائر  
 کی جھلکیاں ابھرتی ہیں۔ یہ کہنا بے جا نہ ہو گا کہ لکھوتی سہا سے  
 فراق گورکھپوری کے کلام میں جا بجا ہندوستانی تہذیب کے پہلو بہ پہلو  
 ہندی بھاشا کی کرشن جہلم لاتی ہیں جو ایک فطری امر کا سہولت دار ہے۔  
 دوسری بات اس حقیقت کی نشاندہی ہے کہ نعت کہنا میری سرشت  
 میں شامل ہے۔ اس لئے اس رنگ اور کیف و گداز سے بھی الگ  
 نہیں رہ سکتا۔

ممکن ہے کہ قارئین حضرات میری کرشن لیلّا پڑھ کر یأس کر  
 یہ بھی اندازہ کریں گے کہ لیلّا کار فاضل کی شاعری اور خیالات بیانات کا

करने में कोई भिन्नक मझूस नहीं होती — मैंने बुनियादी तौर पर एक मुसलमान घराने में जन्म लिया और अपनी तालीम-वतरविषत के दस अवायली साल इस्बामिया स्कूलों में गुजारे हैं और उर्दू, फारसी और अरबी के माहिरीन असातिजा उल्माए वक्त से जवान-व-खयालात की चाशनी का नकशा उतारा है — इसलिए मेरी कृष्ण लीलाओं में मजकूरा अलूम के जखाइर को झलकियां उभरती हैं । यह कहना बेजा न होगा कि रघुपति सहाय फिराक गोरख-पुरी के कलाम में जा बजा हिन्दुस्तानी तहजीव के पहलू-व-पहलू हिन्दीभाषा की किरणें झिलमिलाती हैं; जो एक फितरी अम्र का अईनादार है । दूसरी बात इस हकीकत को निशानदिहो है कि “नात” कहना मेरी सिरिश्त में शामिल है — इस लिए रंग और कैफ-व-गुदाज से भी अलग नहीं रह सकता —

मुमकिन है कारीन हजरात मेरी “कृष्ण-लीला” पढकर या सुनकर यह भी अन्दाजा करेंगे कि लीलाकार फाजिल की शायरी और खयालात और बयानात का Convas बहुत वसीह है या वह तख-



کنو اس بہت وسیع ہے۔ یا وہ تخیل کے ایک حلقہ سے نکل کر دوسرے  
 حلقہ میں پڑنے میں کچھ تامل نہیں کرتا۔ یا یہ کہ وہ عاشقِ رسولؐ  
 ہونے کے دوش بدوش کرشن بھگت اور گور بھگت بھی ہے۔  
 کیونکہ فاضل نے ستا گورو سری بابا گورونانک دیو جی پر بھی اپنی  
 کئی تخلیقات بھینٹ چڑھائی ہیں۔ یا یہ کہ وہ مسلمان ہونے کے  
 ساتھ ہندو بھی ہے اور سکھ بھی۔ میرا جواب کیا ہوگا؟ ....  
 کچھ بھی نہیں۔۔۔ ہاں! اتنا کہوں گا کہ لوگ مجھے شاعر کہتے ہیں۔

یہاں چند کامیوں کے سوال کا جواب دینے میں  
 مجھے تامل نہیں کہ میں نے باپنی عمر کے گرانقدر اور  
 مصروف ترین مہم و سال کرشن لیلہ تصنیف اور  
 مرتب کرنے میں اس لئے صرف کئے کہ سری گیت جی کے  
 مندرجہ پیغامات اور خاص طور پر اس مقدس سلوک کا



ययुल के एक हलके से निकलकर दूसरे हलके में कुछ तअमूल नहीं करता—या यह कि वह आशकि रसूल होने के दोश-बदोश कृष्ण - भगत और गुरु भगत भी है — क्योंकि फाजिल ने सतगुरु सिरि बाबा गुरु नानक देव जो पर भी अपनी कई तखलकात भेंट चढाई हैं या यद कि वह मुसलमान होने के साथ साथ हिन्दु भी है और सिख भी — मेरा जवाब क्या होगा ? ..... कुछ भी नहीं..... हां । इतना कहूँगा कि लोग मुझे “शायिर” कहते हैं —

यहां चंद आमियों के सवाल का जवाब देने में मुझे तअमूल नहीं कि मैंने अपनी उम्र के गरां कदर और मसरूफ तरीं मह-ब-साल कृष्ण लीला तसनीफ और मुरतब करने में इसलिए सरफ किये कि श्री गोता जी के मुन्दरजा पैगामात और खास तौर पर इस मुकद्दस श्लोक का मैं कायिल हूं ।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।  
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

میں قایل ہوں ۔  
ترجمہ :-



your right is  
to work only , but  
never to the fruit  
thereof . Let not  
the fruit of action  
be your object ,  
nor let your  
attachment be  
to inaction .

مجھے کام کرنا ہے اور مرد کار  
نہیں اُس کے پھل پر مجھے اختیار  
کئے بغیر عمل اور نہ دھونڈنا اس کا پھل  
عمل کر عمل کر نہ ہو بے عمل

آتا ہے کہ وسیع النظری سے

نوائے گئے قارئین اور سامعین میری کرشن لیلے کا فی حد تک متاثر ہونگے جس سے  
اُن کے دلوں میں بھائی چارہ کے جذبات ابھرائیں گے ۔

فاضل کشمیری

گلشن نگر سرینگر 15

1-1-1984



कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।  
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

तुझे काम करना है ओ मर्द ए कार  
नहीं उसके फल पर तुझे इस्तियार ।  
किये जा अमल और न ढूँढ-इसका फल  
अमल कर, अमल कर, न हो वे अमल ॥

आशा है कि वसीह-उल-नजरी में नवाजे गए  
कायरीन् और सामियोन मेरी “ कृष्ण-लीला ” से  
काफी हृद तक मुतासिर होंगे — जिससे उनके दिलों  
में भाई चारा के जजबात उभर आयेंगे ॥

**फाजिल कश्मीरी**

गुलशन नगर  
श्रीनगर-१९००१५  
१-१-१९८४

## कश्मीर के रसखान

फाज़िल कश्मीरी ने 'बालक अवस्था' और 'कृष्ण लीला' नामक कृष्ण-काव्यों की रचना करके सूरदास, रसखान, परमानंद, नरोत्तमदास, रत्नाकर, सुब्रह्मण्य भारती की कृष्ण-भक्ति-परम्परा को सुरक्षित रखा। इसके साथ राष्ट्रीय एकता और हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव को बढ़ावा देने में हम उन्हें अमीर-खुसरो, नजीर अकबराबादी, सागर निजामी, बेकल उत्साही, नजीर बनारसी आदि की परम्परा में प्रतिष्ठित पाते हैं। सिखमत के प्रति भी उन्होंने अपना अनुराग दर्शाया है और कश्मीरी भाषा में गुरु-वाणी का भावानुवाद प्रस्तुत किया है, जिसकी अत्यधिक सराहना की गई।

फाज़िल कश्मीरी ऐसे उदारचेता कवि हैं जो भावात्मक एकता के तारों को भङ्ग कर राष्ट्रीय एकता और सौहार्दपूर्ण वातावरण की संरचना में कृतसंकल्प हैं। उनकी कविता में हिन्दू मुस्लिम एकता की भावना को ही प्रधानतया अभिव्यक्ति



किया गया है — कृष्ण की बाँसुरी का मधुरिम स्वर एक हृदय-भावात्मक ऐक्य का संदेश देता है । वही 'जय-जय हरि' कहने लगता है । उसका हृदय پاک-पवित्र हो जाता है, फिर उसमें हिन्दू-मुसलमान का कोई भेद नहीं रहता । फाजिल साहब कृष्ण को गंगा का ऐसा पावन अल समझते हैं, जो हिन्दू और मुसलमान दोनों के दिलों के मेल को धो डालता है —

कृष्ण गो पोशवुन गंगायि हुंद जल,  
छलान हेंचन मुसलमानन दिलुक मल ।

फाजिल साहब कृष्ण की बाँसुरी की मधुरता पर मोहित हैं । बाँसुरी का स्वर प्रेमात्मा है, जीवन - ऊर्जा है, 'साजे दिलबरी' है । बाँसुरी में फूँक मारकर उन्होंने आत्मज्ञान का दार्शनिक रहस्य उद्घाटित किया है । ऐसी खुदी या अहमन्यता उद्भासित की है जिसपर हजारों बेखुदी कुर्बान जा सकते हैं । इसी बाँसुरी से यह आवाज निकल रही है कि अवतार और नबी दोनों अल्लाह के भेजे हुए हैं उनकी मुरली और लय दोनों एक ही हैं, 'रहमान' और 'भगवान' भी ती एक ही समान हैं । कृष्ण के रूप-रंग पर कवि अत्यधिक मोहित है । उसे ऐसा आभास होता है कि फूलों में रंगत कृष्ण की वर्णलन है, उनके कारण यह संसार सुरम्य उपवन बना हुआ है । जिन व्यक्तियों

के हृदय में प्रेम-सत्य की चिंगारी सुलगती है उन्हीं को कृष्ण अमृत के प्याले पिलाते हैं। कृष्ण समदर्शी हैं। फाजिल साहब समझते हैं कि लोगों में जो भाईचारा, सद्भाव, सोहार्द है वह सब कुछ कृष्ण के दम से है। उनका 'कृष्ण लीला' (सचित्र) कृष्ण-काव्य में—भारतीय कृष्ण-काव्य में एक अभिवृद्धि है और वह राष्ट्रीय एकता के दीपक की लौ को सदा अकम्पित रखने वालों में अपना स्थान रखते हैं।

निजामउद्दीन

( निजामउद्दीन )

DR. NIZAM-UD-DIN

Prof. of Hindi

Islamia College, Srinagar

(Kashmir)

१२-१-१९८४



contact with them. Similarly, the devotees who have taken shelter

# TEXT 38

एतदीशनमीशस्य प्रकृतिस्थोऽपि तद्गुणैः ।  
न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥३८॥

etad īśanam īśasya  
prakṛti-stho 'pi tad-guṇaih  
na yujyate sadātma-sthair  
yathā buddhis tad-āśrayā



“मुरली शब्दा गव असि कनन  
वनन छि राधाकृष्ण है प्राव”

”مورلی شبدہ اسے گوکنن۔ وشن چھ راڈھا کرشن ہے سو“

## TRANSLATION

This is the divinity of the Personality of Godhead: He is not

affected by the qualities of material nature, even though He is in

of the Lord do not become influenced by the material qualities.

# تہ ترتیب

شمار	مطلع	صفحہ شمار	مطلع	صفحہ
۱-	قطعہ: ۱۔ اگر چھ طعن سم	۲۲	۱۳-	قطعہ: شبیہ و جیم ۳۶
	ب۔ میہ نش سو	۱۱	۱۴-	۳۷۔ " شر و کرن پوزا
۲-	کرشنا کرشنا	۲۳	۱۵-	۳۸۔ " بیس پرشس زخم
۳-	قطعہ: ۲۔ پیمانہ کرشن	۲۴	۱۶-	۳۹۔ " پرن کپتا تہ
۴-	کرشن پرن پانچو مخلوق	۲۵	۱۷-	۴۰۔ " اسسہ خان گوزنکھ
۵-	قطعہ: ۳۔ پرز لونی	۲۶	۱۸-	۴۱۔ " کرشن مہرین دیا کر
۶-	کرشن نو در تان جاتی ہیں	۲۷	۱۹-	۴۲۔ " گیان بلو متکل کور
۷-	نوبصورت سائہ سنگی	۲۸	۲۰-	۴۳۔ " میو لہرو و پرک
۸-	قطعہ: ۴۔ شہکار قطعہ	۳۰	۲۱-	۴۴۔ " میو واجینو
۹-	" زبہ یاستھ کھو لکھ	۳۳	۲۲-	۴۵۔ " چھ کردارک تھرا
۱۰-	" پریمیش میہ	۳۲	۲۳-	۴۶۔ " سور داسس
۱۱-	" چانہ پریمیک زوگ	۳۴	۲۴-	۴۷۔ " کرکھ یو و کرشن سودا
۱۲-	" میون دل اوس	۳۵	۲۵-	۴۸۔ " کرشن چوئے نقشہ یاچم



ص

78. ۴۱۔ گپالنی دری چھے  
79. ۴۲۔ قطعہ: تھن توڑ نہیں گور  
80. ۴۳۔ اندس پیچھے۔ واصل  
81. ۴۴۔ گپو تھن تہ گرس  
82. ۴۵۔ پیکھ یوڈ کرشن لیل  
83. ۴۶۔ اکران پوزا کرشن جی  
84. ۴۷۔ تصویر۔ کرشن پوزا  
85. ۴۸۔ کرشن سدا ما  
86. ۴۹۔ قطعہ: اکھ سدا ماچھا  
87. ۵۰۔ کرشن گودون سمت  
88. ۵۱۔ قطعہ: غریبن مفلس  
89. ۵۲۔ گلن ہند۔ کرشن جی  
90. ۵۳۔ چھ برہمن دھرم گیان  
91. ۵۴۔ قطعہ: بالنری ہند سانہ  
92. ۵۵۔ مہربانی کرے کرشن  
49. ۲۶۔ قطعہ: کرشن چرن  
50. ۲۷۔ رادھا چھ آشر  
51. ۲۸۔ ڈالہ شو بیا سیون دل  
52. ۲۹۔ گپیشہس بالکس نش  
53. ۳۰۔ شری کرشنا ہنک میٹر  
54. ۳۱۔ ونہ ون بھتوی  
55. ۳۲۔ روپ میون اوس  
56. ۳۳۔ جے جے ہنس منز گران  
57. ۳۴۔ نظم کرشن جی  
58. ۳۵۔ قطعہ: یا اشہر دیت  
59. ۳۶۔ کرشن مہر لی پر تھ زمانہ  
60. ۳۷۔ گپال لاچھو لن گل  
61. ۳۸۔ منہر یا تھ۔ الہ تابہ  
62. ۳۹۔ کرشن۔ سالہ ہوتو  
63. ۴۰۔ مہر کن وچھ  
64. 74.

- ۵۶۔ بالہ پانس لگو تھے از صفہ ۱۱۲۔ گلن ہند ترنم ص ۱۵۶
- ۵۷۔ قطعہ :- یکدلی ہنس شہ ۱۱۶۔ بالہ کرشنن یام ڈرم گہی ۱۵۸
- ۵۸۔ قطعہ :- کنی یس نظر ۱۱۷۔ قطعہ :- بے خبر پائٹھو ۱۶۰
- ۵۹۔ بالہ پانس لاگے جائے ۱۱۸۔ شعورس لاشورس منز ۱۶۳
- ۶۰۔ قطعہ :- وجود ک سر ۱۱۹۔ دلن گودین ودھرک ۱۶۲
- ۶۱۔ رادھا وانا چھناخص ۱۲۲۔ قطعہ :- صحی دھڑٹھ ۱۶۳
- ۶۲۔ کس تام وایان ! ۱۲۴۔ یامستھ یہ آدم دین ۱۶۴
- ۶۳۔ مہ چھا انکار ماتا ! ۱۲۸۔ کرشن جی اجنس ۱۶۵
- ۶۴۔ قطعہ :- ہماسا کرشن ۱۳۷۔ قطعہ :- یام دھرتی پیٹھ ۱۶۶
- ۶۵۔ ہے ! نے چھ کرٹھان ۱۳۸۔ چھ بھگون ناسہ ترسن ۱۶۸
- ۶۶۔ قطعہ :- کرشنہ مہرلی ۱۴۴۔ ستمکار وستم کور ۱۶۹
- ۶۷۔ "میشرونے پرانہ فینچ" ۱۴۷۔ کرشن کہانی ۱۷۰
- ۶۸۔ گیت : کرشن بانری ۱۴۶۔ ہرے کرشنا ! ۱۸۹
- ۶۹۔ قطعہ :- مس مس کرشن کر " ۱۵۵۔ قطعہ :- کرشن چھو کتھ ننگا ۱۹۲
- ۸۴۔ تقاربط اند :- ۱۸۴۔

۱۔ پرو فیروز نظام الدین ۲۔ ڈاکٹر ملک موسیٰ ۳۔ علی محمد لنگر ۴۔ پرو فیروز حسن لال سپرو  
۵۔ شیوا چاریہ سواتی لکھن جو گیت گنگا ۶۔ لال میلدارام نجیون گوہ کج باغ





रघुबीर प्रियाले श्रु लीला मने कन वीर - नर काले तिम सल्ले दमाह - लाले मने कन वीर  
 राधायि बरी प्याल' चे गुपाल' मे कुन बुछ  
 अज काल यिज्जम साल' दमाह लाल' मे कुन बुछ  
 वृन्दावन कलानायौ हृदयानन्द दायिनी,  
 सुखदौ राधिका कृष्णौ भजेहं कुंजगामिनी ॥



اگر چھ ظون سمر بھگوانہ ہندی گون  
 تریہ سپدی شوڈ پنن دل ہیر تے یون  
 چھ تھو سند ناو سمن عین اکسیر  
 بناوان کیمیا گر چھ کھوٹس سون

अगर कृप्यवन सुयर भगवान् संध गोत्र  
 त्रय सपदी शोद पनुन दिल हेरि तय बोन  
 कु तम्य सुंद नाव समनुन एनि इकसीर  
 बनावान कीमियागर कृप्य खोतिस स्वन

مہ نیش او۔ بارہا آو۔ بارہا آو  
 کوہن میانیس موندس منز یوہ ٹھراو  
 تمس کن اکھ قدم تل یاری لاگی  
 کری اوئے دیا بھگون تر آزماد

म्य निश आव बारहा आव बारहा आव ।  
 कौरनु म्यानिस् वीन्दस मंज पूर ठहरव ॥  
 तमिस कुन अख कदम तुल यार्य लागी ।  
 करिय औरय दया भगवान च अजमाव ॥



रुसुता रुसुता



*What, then, is wrong with addressing God as Kṛṣṇa?*

پیتا مائا: کرشن - مائا پیتا سے  
 گورو سے گہیاں سے تے آتما سے  
 دلس شرو پیت - اچھن منز جاتے تم سنز  
 محبت سے خلوص پز دیا سے

پিতا مائا کृष्ण - مائا پیتا سۄی  
 گورو سۄی ج्ञान سۄی तय आत्मा सॄय  
 दिलस ओप मुत अह्न मंज जाय तम्य संज  
 सहोबत सॄय खुलू सूच पंज दया सॄय ॥



कृष्ण पंजय पांड्य मखलूकन पनन मोल ।  
 करान हिस पों पुरिन्थ गथ, तस बरान लोल ॥



# KRISHNA



کرشن پُتری پاتھو خلاقن پین مول  
کران چھس پونپیر فی گتھ تم برین لول

This time, Nārada Muni saw that Lord Kṛṣṇa was engaged as an affectionate father petting His small children. (p. 245)

پیرز لوف دست و پا چم سریه کشتن  
 دلیکیم نقشه نام سریه کشتن  
 یمو کاتیا حین پمپوشه سر کر  
 یمو ستو تخ سجاوم سریه کشتن  
 ۱- دست : آخه - ۲- پا : کھور - ۳- تخ : تخت

प्रजलवन्धु दस्त पा छिम श्री कृष्णस  
 दिलुश्य इम नकशि हाविम श्रीकृष्णस  
 यिमव 'करवाह हसोन पंपोशि सर 'कष्टि  
 यिमव सूत्य तख सजाविम श्रीकृष्णस





His  
Divine  
Grace

कृष्ण मधुर तान छेड़ते हैं



# خوبصورت

● خوبصورت سارے آنکھوں ڈالو تے  
گوپین دیو تو کمرشن سون آو تے  
کمرشن دیو ٹھمڑھایہ روں زن ماتاب  
شامہ ٹھہرین سریرہ ہیو لون درو تے  
میون دل اوس وار روں دروازہ روں  
اٹھو اندر پیرٹھنے کوڑن ٹھہرو تے  
توہستو اونڈ پوکھ کرک کوڑن نہال  
من پیرسن چھم۔ دل برن چھم چاو تے  
ذکر پیٹھ تے فکر پیٹھ کرخم دیا  
میانہ غفلت ہند ہیون ماناو تے  
کمرشن دیو یکتھم تیوت رڈی رڈی سیرگوس  
توتہ دو پیٹھم یکتھم رورڈی گراو تے





खूब सूरत सानि आंगुन्य चाव तय ।  
गूपियन देप्य तव कृष्ण सोन आव तय ॥

कृष्ण द्यूठुम छांयि रो'स जून माहताब,  
श्याम् छांयन सिरिय जून नो'न द्राव तय ॥

म्योन दिल ओस दारि रो'स दरवाजु' रो'स ।  
अंध्य अन्दर प्रछनय को'रन ठहराव तय ॥

नूरु सात्य ओ'न्द पोख गरुक कोरनम निहाल,  
मन प्रसन्न छुम दिल बरान छुम चाव तय ॥

जिकिरि प्यठ तय फिकिरि प्यठ करनम दया,  
म्यानि गफल'न्न हुन्द ह्योतुन मा नाव तय ॥

कृष्ण द्युतथम त्यूत र'टय र'टय सेर गोस,  
तोति दोषथम "युथ न रोज्यम आव तय" ।

یوہ ترھورم، اوہ کرشن گودنس  
 بس کنی کتھ: کرشن گارن پراوتے  
 کرشن سہرت کر تہ چشو دلشہن  
 یوہ نہ باور چھے ذرا اندھاو تے  
 بانسری کن کن تھووم بمنزل سووم  
 فاضلا! سم نغن مہ گو صحراو تے

## شہکار

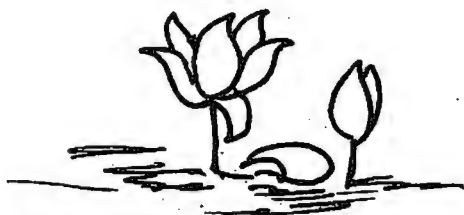
مہ گو بیدار بخ از گوم بیدار  
 وچھم دپرو کرشن تس سریر انہار  
 سہ گورمت و مستہ گارن پوز صغم ہو  
 دتن زلگش پنن اکھ حسن شہکار



योर् छोरुम ओर् कृष्णन मोरनस ।  
बस कुनी कथ—कृष्ण गादन प्राव तय ॥

कृष्ण स्मरन करतु चक्षमव डेशिहन ।  
योद न बावर छुय जरा अजमाव तय ॥

बांसुरी कुन कन थोवुम मजिल सुरम ।  
'फाजिला' आंगुन म्य गव सहराव तय ॥



म्य गव बेदार बरुत अज गोम बेदार ।  
बुछुम दीदव ; बुछुम तस सिरिय अनहार,  
खुदा सबन कृष्ण गोर सोंच कंथि कंथि ।  
दितुन जगतस पनुन अख हुसनि शाहकार ॥



میرا یہ پیچہ کرشنہ دیا

پریمیہ ہر میرا سو گیا نہ کونستال  
جلو ماوتھ بختہ بد کر ستن نہال  
بالہ کرشنا! تیں یہ پرتھ صحنہ دکھ نہ گو کہ  
قی دتم چھہ پینہ غطر ہند سوال



चिं यामत खल्यथम सथ दर्शनकि वर ।  
खोन तल वृछ भ्य सहरा कुह त संगर  
मकानुवय तय जमानुवय हलके छोट्य भम  
छहम ना वृष्ण गोशाला । भ्य यावर ॥

मीरायि प्यठ कुण्ण दया

प्रेम'हृच्च' मीरा न्व' जानुच' कुन्य' मिसाल,  
जलव' हाविथ' आर'क'च' क'रथन' निहाल ।  
बालु' कृष्ण' तम' यि' प्रिय'नय' दिथ' च' गोख  
ती' दितम' न्य' पननि' अजम'च' हुन्द' सवाल ।



भक्तिमती मीरापर कृपा

چانه پریمکاس زونان تيمس لوگ سورگو  
 سريه من پر وون نذران هند نورگو  
 لک ترانی پرانہ سیمچ بیت اس  
 قولہ سستی میرا نہ انگ انگ طورگو

वानि प्रेयमुक् जोगं येमिस - लोग सूर गव,  
 सिर्ययि मन प्रोवुन जूचन हुन्द तूर गव ।  
 लन तरांनी प्राणि समयिच रीत ग्राम ,  
 कोर्व सत्य 'मीरायि' अंग अंग तूर गव ॥





میون دل اوس دارِ روئے دروازہ روئے  
 اُتھو اندر پرتہ ہننے کوئے کُورن کُٹھہر راوتے

میں دل اوس دارِ روئے دروازہ روئے سے  
 اُٹھو اندر پرتہ ہننے کوئے کُورن کُٹھہر راوتے ॥

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो माम, दो नैनो मत खाइयो, पिथी

Love at first Sight

خاند

شپہ کرشن وچھم دھرتی بنیل گو  
 اچھن تہندس شپہس ستی میل گو  
 وجودک ویشر تھووم بس آیتن تسو  
 کرشن پرووم مہ کیت خاند مرھیل گو

۱۔ شپہ = فلو

۲۔ ویشر = جاہلاد

۳۔ آیتن = حاضر



शबीह कृष्णुन वृद्धम धरती बुच्युल गोव,  
 अद्धन तंहदिस शबीहस सत्य म्युल गव ।  
 वनूदुक व्युचथोवुम बस आयितन तंस्य,  
 कृष्ण प्रोवुम म्य व्युत खांदर सद्धुल गव ॥

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो माम, दो नैनो मत खाइयो, पिथी





شرع ڪرڻ پوڙا پڙيڪ اڻهاري  
 ڪرڻ ٻه ڳڻڻ شرع منتر ٿام ڪاري  
 زاهد! ايڏي ڪرڻ دشن دوان  
 دل ڪرڻ موڙم - ديئي اڻهاري

شری ڪرن पूजा—पञ्चुक इजहार यो,  
 कृष्ण भक्तेन शुलि मंज ताम कार यो।  
 जाहिदा ! यिथिन्य कृष्ण दर्शुन दिवान,  
 दिल करुण मोसूम दिन्ही ओधार यो ॥





پرن گیتا تہ کرشنن داس سپدھ  
 سورن گیتا تہ کرشنن مائے پراؤکم  
 کری میل کرشنن لاس ستی سمرن  
 سمر گیتا۔ سمر کرشنن مہ کڈ تھکھ

پرن گیتا ت کृष्णन दास सपदह  
 सूरन गीता त कृष्णन्य माय प्रावक  
 करी म्युन कृष्णलालस सूत्य स्मरण  
 स्मर "गीता" स्मर "कृष्णा" मकड थक

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

येमिस पुरुषस जन्म प्याव फ्रुच पानस,  
 रटन कुन्य कृष्ण वय वोत लामकानस।  
 छुयय प्रालब्ध गनिर अक्रूर संज कल,  
 बनिय पंपोशि सर अंग अंग चे पानस॥

नोट -

वन = गंड, मुशकिल





### भक्त रसखानपर कृपा

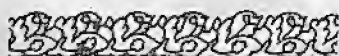
१. मर्यादा

रसखान गौर नकेह कृत चस दया  
 लोलु वालिन कृत दया कितने कम चसिया  
 नापे कारे चस मकरे चोन दास चस  
 कर्ते दास सपेठे अने मर्यादा नका



یستم بیستم کشته مهر آجین دیا کر  
به آسیانی تمس ناو سا گیس تر  
حیاتی تنز بیستم جیون ته حیدان  
سه و آنسن زنده رود پهلون غمزد

यमिस प्यठ कृष्ण महाशयन हया 'कर  
ब आसानी तमिस नाद सागरस 'तर  
हयानी तिहिजि प्यठ जीवन ति ह'रान  
सु वांनन जिद हृद 'प्रवन उमर चर



रसखानस टोठयव दया

इस खानन गोरनख क'रथस दया,  
 लोलु'वात्यन किच् दया कैहं कम छया ।  
 नावु'कारा छुस. मगर चोन दास छुस,  
 करत दासस प्यठति अज म्यहरुच निगाह ॥



भक्त विल्वमंगलपर कृपा

گپالین بلو منگل کو رہِ خو شحال  
 تمس اوس کرشنہ سمرن حالتے قال  
 اوے کر نو نس منزل سواگت  
 چھ کوتاہ رت دیا لو کرشنہ گویاں !



یمو لہرو پزرک قصرِ شاهی  
 تمو گمر پانہ ہے آخرِ تباہی  
 کرشن مہراج ووتھ اڈھار کورناکھ  
 چھ کوتاہ جان بھگون یا الہی!

प्रिमव लुहरोव पजरुक कसरि शाही,  
 तिमव कर पानसुय आखर तबाही।  
 कृष्ण महाराज वेथ उधार कोरनाक,  
 छु कोताह जान भगवन या इलाही!

गोपालन बिल व मंगल कुर्य खुशहाल,  
 तमिस ओस कृष्ण स्मरण हाल तय काल।  
 अवय करनाव्यनस मैजिल स्वागत,  
 छु कोताह रुत, दयालु कृष्ण गोपाल !!



फलवालीपर कृपा

मीबो वाजिन्नु बختे बुद्ध अहं ना नैन  
 कश्चिन्ने समन अस्स तस्स पुत्रात्ते दिव  
 पितृत्वे ममोस्स मन्त्रं दध्मिस्सु कश्चिन्ने रङ्ग  
 हवोस्स त्थि ममोक्क पत्तं - कत्ताहं



چھ کردارک تھفر و لیود کر تہنہ بھگتس  
 تہمس گیاچ تیش پانس اندر مس  
 چھ اوگون تہنہ تہ دور تہ دور  
 تھوان بھگون پیرش تہ تہ پانس

छु किदाहक यजर व्योद कृष्ण भक्तस,  
 तमिस ज्ञानुच्य तपिश पानस अन्दर मस,  
 छि अवगुण तस निशे यच्च दूर यच्च दूर,  
 थवान भगवन पुरुष युथ सूत्य पानस ॥

मेव वाज्यन्य भक्त वड अख नाजनीन,  
 कृष्ण स्मरण ओस तस पूजा तु दीन ।  
 प्रथ मेवस मंज द्रांष्ट्य गव तस कृष्ण रंग,  
 होवनस तम्य मुख पनुन कोता हसीन ॥



سَوَدَاسِ اَکَرِشَنَہِ! بَخْشِشَہِ گِیَانِ دِہِیَا  
 تَشَنَہِ ہِروَنِ گُو سَہِ عِرنانِ بَاگِرنِ  
 کِیَاہِ گُترِہِی کَمِ یُو دِمِہِ تے سَاگِ کِرِکِہِ  
 لَکِہِ مِہِ مَنزِوِ مِیٹِہِ اَکِہِہِ تَارِسِ تَرانِ



کرکھ یوڈ کرشنہ سودا کن پنن دل  
 مگر سودا بنن دو ان منز چھ مشکل  
 کرنی ما اوہ بھگون بخت بیدار  
 ملے کر کرشنہ بھگتی بن تر فاضل

करख येद कृष्ण सोदा 'कुन पनुन दिल,  
 मगर सोदा बनन दुन मंज छु मुशकिल,  
 करो मा ओर भगवन भक्त बेदार,  
 मुलय कर कृष्ण भक्ती बन च फाजिल ॥



सूरदासस आनुय गाथ

सूरदासस कृष्ण वचनुय ज्ञान ध्यान,  
 तइनु हृदयन गो सु हरफान बांगरान ।  
 क्याह गछी कम योद म्यते मागर करख ।  
 नुख म्य मंज्य आसहन तारस तरान ॥



श्रीकृष्ण-चरण

کرشنہ! چوئے نقشہ پاچھم شوڑ من  
 چھس اوئے کنو دین و دھچ و تھ سورن  
 پی کران لچھ مننر لن ہنر و تھ کڈم  
 چھیکرس چھس پانہ از مننر بنن



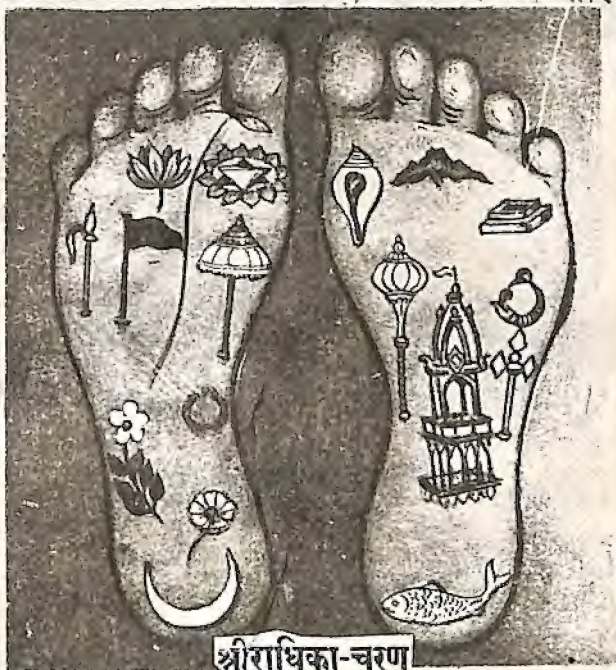
شری کرشنی چہرن سادھن کلس پیچہ  
 مگر یارس چھلان پینو اٹھو کھوہ  
 یہ کرنس منز تمبس حاصل پرستنا  
 یہ گو پریمک خلو صک آخری حد

نوٹ :- ایار: سدا جیس کن اشارہ پرستنا: خشتی، ہسرت۔

श्रीकृष्णन्यकरण सादन, कलस प्यठ,  
 मगर यारस छलान पन्यव अथव खुर।  
 यि करनस मंज तमिस हांसिल प्रसन्नता,  
 यि गव प्रेममुक, खलूमुक मोखरी हृद ॥



कृष्ण! चोनुय नकली' पा छुम अच मन,  
 छुस अवय किन्य दीन' धर्मच वय स्वरन।  
 यी करान लछ म'जिलन हंज वय क'हु'म,  
 छेकरस छुस पानु अज म'जिल बनन ॥



श्रीराधिका-चरण

॥ देवाच्चे अमर कर्शने तो दाहे अनं नान  
 प्रेते मनस पिये नाने नैन बाहे दितुं ग्यान  
 मरुम प्रेसन बाने दीन दीत नृ बक्ष दल  
 तम गाशे शस थिरे दूर पिये तो अति प्रेसान



# پمپوشیا

دَالِ شَوْبِیا میونِ دِلِ مودِلی دَرَس  
 بس یوہے پمپوش پھول میانس سرَس  
 دِلِ چیمِ دِلِ پمپوش پادَن ہندِ عکس  
 دَا لَکڑاوتھ کھورَن میوٹھ کرس

پمپوشی پاद

हालि शूब्या म्योन दिल मुरलीदरस,  
 बस योहय पम्पोश कोल म्यानिश सरस ।  
 दिल छु दिल पम्पोशि पादन हुन्द अक'स,  
 डाल्य गुजराविथ खोरन म्यूठा करस ॥

राधा छि आमुच कृष्ण वतव, डाल अग्निन जान  
 प्रथ मैजिलस प्यठ जानुबुन्य न बागि दितुन जान  
 महरुम पुरुषण वानु, दयन छुतु न बखशुन दिल,  
 तिम गाशिनिश यच दूर प्यमति अग्न्य त परेजान

گیشوم



گیشیمس بالکس نش زون شران  
پری چھا! عور چھا! اوتار انسان  
اچھن و زمل، ڈیکس زندم موکھس کہ  
پہ و چھتے کامہ دیوس ہوش راوان



سری کرشنا! منگ وِتر باؤ فام  
 پتا ماتا چھرہ سم پتر سچ ریا دم  
 پمن میانن گوئن پھر امریتک سنگ  
 امی سیتی زخمیہ پھیر کا سُم بقا دم

श्री कृष्ण ! मनुक व्युच बाबिका दिम  
 पिता माता छुहम भ्रमच्य दया दिम  
 यमन ध्यान्यन गुणन फिर भ्रमनुक सस  
 अभी सृत्य जन्म फुयर कासुम बका दिम



ग्येशेमिस बालकस निश जून शरमान  
 परो छा ! हूर छा ! अवतार इन्सान ।  
 भछन वुजमल, हयकस चन्द्रम मुखम गाह  
 यि वुछयय कामदोवस होश रागनि ॥

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।

उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनरस्तच्चदशभिः । १६ । अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् ।

अनामिकाः १८ । अनामिकाः १८ । अनामिकाः १८ । अनामिकाः १८ । अनामिकाः १८ ।



سَمْعُ تَوْبَىٰ كَوَيْبِ شَامِ اِهْ تَرَو  
 بِالْهَ كَرِشَنَسْ كَرُو پُوشَه پُوزَا  
 پُوشَه پُوزَا كَرْتَه لُولَه شَبَاهِ پَرُو - بِالْهَ كَرِشَنَسْ كَرُو پُوشَه پُوزَا  
 بِالْهَ كَرِشَنَسْ كَرُو پُوشَه پُوزَا



अज्ञो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणा  
न हन्यते हन्यमानो न हन्यते

रूप म्योन ओस मनहंमी सत्य नार ज़न,  
जमहरीरुख्य पाठ्य शेंहलीव सोचनन।  
तनहरास्त-मन छु ज्ञानुच चेनुवन,  
चेनुवन ज्ञानुच दिबुम मोरलीधरन ॥

रूप म्योन ओस मनहंमी सत्य नार ज़न,  
जमहरीरुख्य पाठ्य शेंहलीव सोचनन।  
तनहरास्त-मन छु ज्ञानुच चेनुवन,  
चेनुवन ज्ञानुच दिबुम मोरलीधरन ॥



(बनुवन)

सम्यतवी गुपियव शालुमार हय तरव,  
बालकृष्णस करव पोशि पूजा ॥  
पोशि पूजा करिथ लोलु शब्दाह परव  
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

कदाचि-  
न जायते म्रियते वा  
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।  
उभौ तौ न विजानीतौ नायं हन्ति न हन्यते ॥

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।

گوکس ساری سے زینہ زولہ کرو۔ جایہ جایہ ہے کرو زینہ سس سال  
پریمہ سرہیہ بانسری لولہ تھاکن برو  
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

الفنج مورتھ پتھ شریس گرد۔ لولہ والین دپو پتھ برن مے  
مایہ ہوت اکھ قدم تل تر وچھ مامرو  
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

مالہ لوگ پریتس پتھ ہن مازرو۔ سارے دل تہ شل انچھ لوشان  
گبونہ لچ اسہ جوی۔ نرنہ لگویم سرو  
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای

حسنہ اکاشہ کنی لعل و گہر جیرو۔ تار کن فاضلا شولہ پراگاش  
دیوین گونڈھ ون پانہ اند تر اورو  
بالہ کرشنس کرو پوشہ پوزای



नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥

॥ पञ्चमः प्रश्नः ॥

हुसन् आकाशि किन्त्य लालु गीहर जरव,  
तारुकन 'फाजिला' शोलि प्रागाश ।  
दीवियन गेछ बनून पानु अज् आवि रव,  
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥

तथा शरीराणि विहाये जीर्णा-  
 न्नं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय  
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।



# جے جے!

منس منز گردان بانسری ہنر موڈ لے  
 یہ لے بالہ کرشنا چھ چانی تہ جے  
 پزیک آلوہ گو و ن منز پیا پے  
 یہ چانی چھ بڈ مہ بانی تہ جے  
 دو دک شریہ تہ امرت چھ کھاسن بزان  
 چھ اتھ سلسیل روانی تہ جے  
 مو کھس پیٹھ گلاب پانہ پیرمی تہ چھے  
 نہ کہنہ چھ بکر لہ نہ ثانی تہ جے  
 دئی کم گڑھاتھ پانہ منزل گڑھان طے  
 پئے گون کران پاس بانی تہ جے



किं नो गच्छेत् गोविन्द किं भयं विन्देत् किं क्लेशं भवेत् ॥

## जय जय

मनस मंजु प्रेङ्गान बांसुरी हुंजु मोदुर लय,  
यि लय बाल कृष्णा छे चा'नी चे' जय जय।

पङ्कुक आलुवाह गव वनन मंजु पयापय,  
यि चानी छे ब'ड मेहरबानी चे' जय जय॥

दो'दुक सेह त् अमृत छे खास्यन बरान नय,  
छे अथ सलसबोल च' रवानी चे' जय जय॥

मोखस प्यठ गोलाब पानु प्रेमी चे' छुय दय,  
न कांह छुय बराबर न सा'नी' चे' जय जय॥

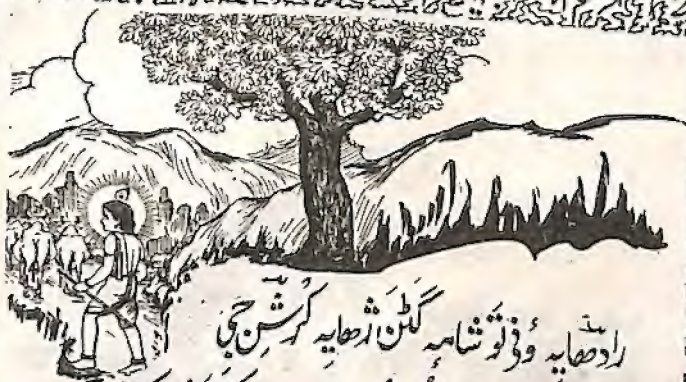
दुयी कम गच्छिय पानु मंजिल गछान तय,  
यिमय गुण करान पासबानी' चे' जय जय॥

नोट : 1. सोरगुकसर 2. चे छुव 3. सिफत

4. राछ

च राज्यं सुखानि च विजयं कृष्ण न च राज्यं कलहं न काङ्क्षे ॥ न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ।



رادھایہ وڈو تشاہہ گلن ڈھایہ کرشن جی  
 درشن چھہ ہاوان پانہ کیو ترپہ کرشن جی  
 تھنو نقشہ بنی بنی گاشہ بھس غاڑ بھس گو  
 لوئس تہ ہر دس سرپہ چھہ سرپاہ کرشن جی  
 یتھ جاپہ لوکن مایہ بوڑت شریہ تہ سمت خمد  
 صالح چھہ ویان بانسری تھہ جاپہ کرشن جی  
 یتھ کرپہ اتش نار تھر تریشہ ستین لوگ  
 تھہ کرپہ گنگا سپہ شہل سپاہ کرشن جی  
 فضل اچھہ تس تس باگہ تھڑ لانہ سپر تس  
 یس پریمہ سانے تپر نظر لاپہ کرشن جی

۳۴۔ یہ دیکھو میں دادے بھی استاد بھی پیر بھی ہیں اور ان کی اولاد بھی ہے۔



नित्य धारणात्तः का प्रीतिः साजानदन । ॥ ३६ ॥



राधायि वनिव शाम् गटन छांयि कृष्ण जी,  
दर्शुन छि दिवान पान् कम्पू त्रायि कृष्ण जी ॥

थन्य नक्षशि वनिथ गाशि बुधिस गाज् ब्रमन गव,  
लोलस तु हृदयस मिरियि छु सरमायि कृष्ण जी ॥

यथ जायि लुकन मायिब्रूत ह्येह तु समुत रबोय  
सुलहच छे वायान बांसुरी तथ्य जायि कृष्ण जी ॥

यथ क्रायि भातश नार तचर त्रेशि हत्यन लेण,  
तथ कायि गंगा अयि शुहुल सायि कृष्ण जी ॥

"फाजिल" छु बखतस बागि यजर लानि स्यजर  
तस,  
यस प्रेमसानुय तीरि नजर लायि कृष्ण जी ॥

नोट -

त्रायि = नहजि २ गाज - पीड़र

३ व्युच - सरमायि

प्रापमेवाश्रयेदसानहत्त्वतानाततायिनः ॥ ३६ ॥

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः

मनुष्यः भगवतः पितृणां भक्त्याः संवन्निनस्तथा ॥ ३७ ॥



لے

● یام شہ دیت کرشنہ اوتان نے  
جے ہری گور زنگتہ سمسارن دے  
اندہ زنگتہ یا نہ زنگتہ گہ بے گہ  
کل ویشی ہے تھو تھ کن تھ لے

اے یس کہنے چیز زنگتہ چھ مثلن حیوانات، نباتات، جمادات، پتھر۔





# تلا بانسری تل!

گپ لا! پھولن گل۔ ذرا بانسری تل  
 تریہ پیارا چھ بلبُل۔ ذرا بانسری تل!

تر پریمک تہ لوک مجسم مجسم  
 فد اچھی تریہ کم کم۔ ذرا بانسری تل!

نبس پیٹھ سلی کور تمنا ستارو  
 قدم تھو قدم تھو۔ ذرا بانسری تل!

تریہ پرتو مہ تر و تھہ مگر تھہ تھہ  
 گجس چاہنہ مائے۔ ذرا بانسری تل!

۱۔ ذرا = ہنہ ۲۔ نب = آسمان ۳۔ تمنا = شوق ۴۔ پرتو = جلو

ہم قبیلہ فنا گر کوئی ہو گیا فدیم وہ دھرم اس کا سب کھو گیا



॥१४॥ : १५०॥ १६०॥ १७०॥ १८०॥ १९०॥ २००॥

## बाँसुरी तुल

गुपाला ! फोलन गुल, जरा बाँसुरी तुल,  
चें प्रारान छि बुलबुल, जरा बाँसुरी तुल ।

चु प्रेयमुक तु लोलुक मुञ्जसम मुञ्जसम,  
फिवाँ छी चें कम कम, जरा बाँसुरी तुल ।

नवस प्यठ सुली कोर तमन्ना' सितारी,  
कवम थव कवम थव, जरा बाँसुरी तुल ।

चें परतव' म्य प्रोबुथ मगर छायि छाये,  
गजिस चानि माये, जरा बाँसुरी तुल ॥

नोट :— 1. कोरवान 2. :— यडा 3.— जसव

कुलधर्मोऽभिभवत्युत ॥४०॥ कुलधर्माभिवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः ।

कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः ।

सकरो नरकार्येव कुलमानां कुलस्य च ।  
पतन्ति पितरो ह्येषां क्षमपिच्छेदकक्रियाः ॥

گُلن منز ہر گوا، یتو گاشرو ول  
اچھن میل تو مل، ذرا بانسری تل!

یمن گوین منز تریہ موہری دتھ شہ  
تمو کوڑ دئی لہ، ذرا بانسری تل!

ٹر بالک اوستھا تریہ شو بھاچھ غم تھ  
ٹر لگتھ حقیقتھ، ذرا بانسری تل!

کشی ہش کشش چھے تریہ اتھ بالہ پانس  
ٹر مرکزہ پانس، ذرا بانسری تل!

دماہ سانبہ یتو اسبہ تھو و از لو تھ دل  
چھ فاضل تریہ مایل، ذرا بانسری تل!

۱۔ شدہ پھوکھ ۲۔ لہ۔ لہ۔ لا۔ انکار ۳۔ مرکزہ ۴۔ لو تھ۔ لو تھ دو تھ

۵۔ قبیلوں کو غارت کرین جو بستر، ہوں ورن ان کے پاپوں سے زیر و زبر



॥४४॥ मन्त्रः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गटन मंज हुरधर गव घितो गाशरो वल्य,  
अछन मेलतो मल्य, जरा बांसुरी तुल ।

यिमन गुपियन मंज चे मोरली दितुथ शह,  
तिमव कोर दुयो लहे, जरा बांसुरी तुल ।

चु बालक अवस्था, चे शोवा छय अजमथ  
च जगतुच हकीकत, जरा बांसुरी तुल ।

कशिश हिश कशिश छय अथ बाल पानस,  
च मरकज जहानस, जरा बांसुरी तुल ।

दमाह सानि बेहतो, मे थोवमय लिविथ विल,  
छु 'फाजिल' चे मायिल, जरा बांसुरी तुल ॥

नोट :— 1. इनकार 2. बजर

दोषैरैतैः कुलमानां वर्णसंकरकारकैः ।

जनार्दन । मनुष्याणां उत्सन्नकुलधर्माणां उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥

# منزل پاتھ



آلہ - نابذ - تریر - بادم چھیلو  
 لولہ بُرتیو کرشنہ لالو از و لو  
 دیشنگ و انس مہر روم از و  
 لولہ بُرتیو کرشنہ لالو از و لو

ہی تہ یمبرزل تہ جافری تے گلاب  
 یامن پیمپوش وری کیو آفتاب  
 یم دین کری یاد تم گل لاگیو  
 لولہ بُرتیو کرشنہ لالو از و لو

دوسرا دیہائے

لین جے نے کہا

ایجو از جن کا دیا کھایہ رنج و ملال تو علم و سوز دل کہیں طبیعت نہ ہال





माल, नाबद, चेर, बादाम, छिकयो  
 लोलु बर्यंत्यो कृष्ण लालो अज बुलो ।  
 दर्शनुक वांसनमे रुदुम आरिजो,  
 लोलु बर्यंत्यो कृष्ण लालो अज बुलो ॥

“हो तु यम्बरजल तु जाफुर्य तय गुलाब,  
 योसमन, पम्पोश, विरिकैम्य आफताब,  
 यिम दयन कैर्य पौद् गुल तिम लागयो,  
 लोलु बर्यंत्यो कृष्ण लालो अज बुलो ॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।

अनादित्वात्कालमन्वयः ॥ २ ॥

कमलमिदं विषमे समुपस्थितम्

कुतस्त्वा ॥ १ ॥

विप्रीदन्तमिदं वाक्यश्रुत्वा च मधुसूदनः ॥ १ ॥

कृत्यं मा स गमः पार्थ नैतत्पर्युपपद्यते ।  
 शुद्धं हृदयद्वैतल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥ ३ ॥

میانہ واران سپنہ کین پیجرن اندر  
اکھ دین کو پھر چھ پھر پھر زن کھنڈر  
چانہ باپتہ چھم روتھ پھر پھر  
لولہ پھر پھر کرشنہ لالو اندر لولو

سریہ ہو کہ نہ ندرم ڈیکس تا کہ پھر  
پھر چشمن زن زنہ چھ امریت پھر  
دل چھ لم گاہے نہ نہتم روبرو  
لولہ پھر پھر کرشنہ لالو اندر لولو

چانہ ویرے کو کلو منزل ژھنڈم  
وژ دتم جنہایہ بھو بھو پے تھوم  
در اصل چھم کس مہ چنے پھستجو  
لولہ پھر پھر کرشنہ لالو اندر لولو

ایضاً

۵۵-۵۶ لولا کے فاتح دشمنان مڈھو مارا مجھ سے یہ ہو گا کہاں



यानिव हत्वा न जिजीविषाम-  
स्तोऽबस्थिताः प्रभुमेव धार्तराष्ट्राः ॥ ६



## سالہ تہو!

کرشنہ گوپالہ! دماہ سالہ تہو      سریرہ میشالہ دماہ سالہ تہو  
 میانہ امالہ! چھ مشکل بے رنجی      وہنی کوو وڈالہ دماہ سالہ تہو  
 انتظاری! بے قراری پیرالبس      رہ کس کھالہ دماہ سالہ تہو  
 بانسری تل! زن و سن ہتھ سلبیل      اسی ہرو پیالہ دماہ سالہ تہو  
 فاضلن تھو و من سجاو تھ بس ڈیہ کیت  
 از سلی کالہ دماہ سالہ تہو

طبیعت ہے مکر و دھول نہ رہے تو یہ الجھن ہے اب کیا مرد دھرم ہے



साल् यितो

कृष्ण' गूपाल' दमा साल यितो,  
सिंघ मीसाल दमाह साल यितो ।

म्यानि अमारु ! छे मुशकिल बेरुखी,  
वोन्य कचो चालु, दमाह सालु यितो.

इन्तिजारी, बेकरारी प्रालबस,  
राह कमिस खालु, दमाह सालु यितो।

बांसुरी तुल जून वसन हथ सलसंबील,  
अस्य बरव प्यालु, दमाह साल यितो।

“फ़ाजिलन” थोव मन सजाविथ बस चै  
क्युत

अज सुली काल, दमाह साल यितो ।

नोट : 1. नसान्न, तकदीर, 2. वर्गक सर

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः

प्रच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः

न हि प्रपद्यामि समापनुद्यादु

यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे

शिष्यस्तैऽहं शशि मां त्वां प्रयक्षम् ॥७॥



## مہ کن وچہ

رادھاپہ بُری پیالہ تڑپ گویالہ مہ کن وچہ!  
 از کالہ پنجم سالہ دماہ لالہ مہ کن وچہ!  
 مورلی دِ کئے شہ تہ گن پھر پین رنگ  
 ۱۔ بھوکہ بلبل تڑپ کرن یوسمن مالہ مہ کن وچہ!  
 تن تھنوتہ بٹھس جلو، اچھن سچر دیکس گہ  
 ۲۔ گاش زن سرپہ تڑپ موصومہ کر تھ مالہ مہ کن وچہ!  
 ۳۔ داپہ حلقہ



नन्वेवाहं जगु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः ।  
न चैव न भविष्यामः सर्वे कथमतः परम् ॥१२॥



## मैं कुन बुछ

राधायि बंरी प्वाल' चे गूपाल' में कुन बुछ  
अज काल' यिद्धम साल' दमाह लाल' में कुन बुछ  
मोरली दि कुनुय शह त् गुलन फेरि पनुन रंग  
बुलबुल चे करन यासमनन माल' में कुन बुछ  
तन थन्य त् बुथिस जलव', अछन सैहर उथकस गाह  
जन सिरियि चे मोसुम् करिथ हाल' मे कुन बुछ

नोट : 1. गाश 2. थालव-थालव (थाल सुत्य)

तमुवाच हृषीकेशः प्रहसानिव भारत

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ॥१०॥  
सेनयोस्तुभयोर्मध्ये विपीदन्तमिदं वृक्षः ॥१०॥

گو کل بہ نمٹھ شامہ گٹن ڈھایہ وڈے زو  
 یادم تہ خفر، آلہ چھکے تھاہ مہ کن وچہ!  
 از چاہنہ کلے ٹھانہ وڈے ملکہ بہر تھ چھم  
 دامہ ڈاگر چھاکہ تہ بہ سنبھالہ مہ کن وچہ!  
 دروازہ تھا فے وٹھو تہ بہ پرتھ جاپہ کرے زول  
 بوخونہ جگر ہالہ شمع زالہ مہ کن وچہ!  
 یو دلاکے بکری دوز تہ سنے گیلہ مہ وچو وچو  
 کنہہ واپہ کرن چھمنہ رٹھ نالہ مہ کن وچہ!  
 چھہ وکنہ گنڈ تھ دوز تہ بہ گوبی چھ نزلخان  
 زہنہ ہرنہ کھیل س منزنہ ڈر تھ تھالہ مہ کن وچہ!  
 کم پایہ چھ فاضل ڈہری کرشنہ نظر تل  
 آسن تہ آسن بہ تہ بہ پتھ گالہ مہ کن وچہ!

۱۔ زول = پڑاغاں ۲۔ بکری دوز = گستاخ۔



न हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ । समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥१५॥

गोकुल बं निमथ श्याम गटन छाधि वंदय जुव  
बादम त् ख'जर आल' छकय थाल' में कुन बुछ  
अज चानि कले ठाम् वछय मलरि बरिथ छम  
बामाह च अजर चख त् बं सम्बाल' में कुन बुछ  
दरवाजु थवय ब'थ्य त्' चे' हर जायि करय जूल  
बो खूनि जिगर हार' शमह जाल' में' कुन बुछ  
योद लागि बुकुर्य दोर त् समय गेलि में' बुछ-बुछ  
कांह वायि करुन छुमन् रटथ नाल' में' कुन बुछ  
छय विगनि गंडिथ दर्य त्' चे' गूपी छि गजल खां  
जांह हरन् खेलिस मंज न् दिचथ छाल' में' कुन बुछ  
कम मायि छु "फाजिल" त् श्री कृष्ण' नजर तुल  
आसुन त् न आसुन बं चे' पथ गाल', में' कुन बुछ



देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।

तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न लब्धुमिति ॥१६॥ मात्रास्पर्शस्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।

گلا لہ!

گلا لا! ذرا بیل! گپا لئی دیرے چھہ  
جگر چھیل جگر چھیل! گپا لئی دیرے چھہ!

تربہ چھہ داغ سپنس، مہہ دکھ چھیم دلس چھیم  
یہ مشکل تہ کر حل! گپا لئی دیرے چھہ!

وہ نرج نادر برہمہ ہمش تہ لا گتہ قبا چھکھ  
شیخ تہ ادرہ ول! گپا لئی دیرے چھہ!

تہ بہمہ مسولن منز، تہ یاد اسمت کر  
گنبر الفچ کل! گپا لئی دیرے چھہ!

گپا لا! یمن سپنہ ددی آخ رو دکھ  
تنگھ ممل تلکھ ممل! گپا لئی دیرے چھہ!

۲۵۔ نہیں آتا کوئی لغو تہ زوال، خواہ اس میں کچھ نہیں ہو، چھہ چھہ چھہ



# गुलाला !

गुलाला ! जरा बल, गुपालन्य द्रुय छय  
जिगर छल, जिगर छल, गुपालन्य द्रुय छय ।

जे छय दाँग मोनस म्य दुख छुप, दिलस छुम  
यि मुशकिल चू कर हल, गुपालन्य द्रुय छय ।

बोजूज नारु ब्रह्म हिश चू लांगिय कवा छुल,  
शिहिज चादराह बल, गुपालन्य द्रुय छय ।

चू बेह मसवलन मंज, चू हाँदिल समुत कर  
गन्यर उल्फतुच कल, गुपालन्य द्रुय छय ।

गुपाला ! यिमन सीनु द'छ आख रुदिल,  
तुलुख मल, तुलुख मल, गुपालन्य द्रुय छय ।



अन्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।

तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशंसिषुमर्हसि । २७ । अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च । २८ । तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचिषुमर्हसि । २९ ।



۱۔ تھنڑو روپ پیس گور کھیٹھ کرشنہ گپالا  
 ۲۔ تس کھنڑو ڈپکس درہ تہ دس گونہ ملالا  
 ۳۔ ماتاہہ ژبہ موصوبہ وونے لفظ مکھن پچور  
 ۴۔ اچھہ یٹھنہ لگی بارکا اچھکھ حسن کمالا

۱۔ تھنڑو = مکھن ۲۔ گور = گوری بائی ۳۔ درہ کھیٹھ = ملالہ کرشن ۴۔ پچور = چور  
 ۵۔ اچھہ لگنہ = جسم بد لگنہ ۶۔ حسن کمال = Beauty Incarnate

۲۹۔ سن اپنی عقل کے لوگ کا حال سن بہت اہمیت میں جس سے کہتوں کے گن







## تھنہ ثور

گبو، دود تہ گرس کیاز تہ نہ اندیشہ کرتھ چوتھ  
 بھگوانہ! پھند باگہ بورت شیجار لکن دوت  
 زو منگتہ بھگہ منگتہ تر لکھ منگتہ دل وجان  
 موصومہ لکے کیاز اسی ثور مکھن کھیوتھ!

۱۔ عقلا اندیشہ کرتھ = کھڑی کھڑی ۲۔ روح = آتما ۳۔ مکھن = تھو

لگا ہوں سے پہلے یہاں ہوں وجود یہ چھینچ میں کچھ عجایاں ہوں وجود



आचार्यवत्पश्यति कश्चिदेन  
 आचार्यवत्पश्यति कश्चिदेन  
 ॥१६॥

پیر کہ یوڈ کرشنہ لپلا گیان لاری  
 اہنکارک یوہے سپما ب ماری  
 یہ حاصل گوئی تہ سپد کہ کیمیاگر  
 یوہے گون ساگرن منتر تار تاری

परख योद कृष्ण लीला ज्ञान लारी ;  
 अहंकारक योहय सीमाब मारी ।  
 यि हांसिल गोय त सपदस कीमयागर ,  
 योहय गोण सागरन मंज तारु तारी ॥

ग्यव, दुद, तु गुरुस क्याजि त्रै अदेश करिथ चोष,  
 भगवान् ! युहुंद बागि केरुत वोहजार लुकन वोत,  
 जुव मंगत, जिगर मंगत, च रह मंगत दिलो जान,  
 मोसुम् ! लगय क्याजि असो चूरि मक्खन ख्योष,

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत

कश्चिदेन  
 आचार्यवत्पश्यति

कश्चिदेन  
 आचार्यवत्पश्यति  
 ॥१६॥

ہشترتس نش ہشترتس تہ یارس  
مگر وچھتو پیمن دھن منز فرق چھا  
تہماسن با گراون پوز محبت  
کرشن جی چھے کران داسن عنایت  
اکتھکن تھو قتل غارت بیتھکن  
پتھے بخشاں ست آکاھی چھے بھگون  
تھوں قائم پتھی گون چھے کرشن جی

کران پوز کرشن جی دوستانس  
سدا اکھ فقہراہ تے کرشن شاہ  
وفاداری، دیانت، نیک سیرت  
خلوصک شریہ تہ جندج جا دیت  
اکتھکن نے مہا بھارت بیتھکن  
چھے دوشو منز دیوان مکتی سہ لوکن  
بجبر گوئی تہ عرفانک تھزری

करान पूजा कृष्ण जी दोस्तानस ,  
हिशर तस निश—हिशर यारस तु यारस ।  
सुदामा अख फकीराह तय कृष्ण शाह ,  
मगर वुछतव यिमन देन मंज फरक छा ।  
वफाद्वारी, दियानत, नेक सौरत ,  
तमामन बागरावान पोज मुहव्वत ।  
खलूसुक श्रेह तु जजबुच जाजिबियत,  
कृष्ण जी छुय करान दासन अनायत ।  
अकिथ कुन 'नय'—महाभारत बिबिथ कुन,  
अकिथ कुन 'थेन्य'—कतुल, गारत, बिबिथकुन,  
छु दुव्वन्य मंज दिवान ओदार लूकन,  
यिथय बखशान सत आगाही छु भगवन ।  
बजर गव ई त ईफानुक थजर ई ।  
थवान काइम यिथी गुण छुय कृष्ण जी ।





भगवान्ने स्वयं पूजनकी सामग्री लाकर सुदामाजीकी पूजा की।



کون



# کرشن سدا

کرشن مہراج اکھ بالک اوستھا  
میتراوس بالہ پانک تس سدا

پمن اوس شرولہ منتر یارانہ یارز  
کران تھ پھ رشک اس پانہ یارز

سدا ما عمر منتر ہر ونہ کن پکان گے  
کرشن اوتار تس پھ ایشور دے

سدا اکھ کرشنی سادھ بلکل  
کرشن اوتار مہراج ساک کل

کرشن اوتار گو مشہور عالم  
یوان اسی درشنس تس سادھ کم کم

کرشن سدا مقصہ پند دوستی تہ یاد وادری ہند اکھ تارہ نجی تہ یوشون اینہ

۳۱۔ ترافض کیا ہے رکھ اس پر نظر نہ جی و گما اس کی ناممیل کر





سدا ما ووتھ ملاقات کو ترھ مہ سپدن !  
 نصیبس لیکھتہ میانس کرشنہ درشن !



تیاری کر سدا سن زیمہ سفر ج - ٹلن سستی تحفہ پھچھہ بیل تلمج  
 پکان کو تھاکھ کڈان گو بر ونہ پکان گو - کڈان و تھ ا لقیع زنہ ماتھکا گو  
 کرشن وچھنک تمن تاس دلس پیچھہ  
 تہ اتھو شوقس اندر ووت منر لاس پیچھہ  
 اچانک کرشنہ لاس گو یہ گوشن - سدا ما از بیم من چھم مہ توشن  
 سدا ما او در بار س اندر تراو - کرشن ہراج یورے انہ تس دراو

رلوایتھ چھ زسدا اس اوس تحفہ پھچھہ منر مہ بیتھ تہ چھ علاقائی زبان منر سدا ناں چھ

وہ بولیں گے ناغنی کو لیاں اچھا کرشنہ لاس گو یہ گوشن - سدا ما از بیم من چھم مہ توشن - سدا ما او در بار س اندر تراو - کرشن ہراج یورے انہ تس دراو

وہ بولیں گے ناغنی کو لیاں اچھا کرشنہ لاس گو یہ گوشن - سدا ما از بیم من چھم مہ توشن - سدا ما او در بار س اندر تراو - کرشن ہراج یورے انہ تس دراو



त्वां महारथाः ।

मंस्यन्ते

॥ दुपयं

ॐ भगवद्

**THE**

118211

विशिष्ट



संभावितस्य चाकीर्तिर्मणादतिरिच्यते

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्

اون با شان و شوکت پور حشمت - پھ چھنا بالہ پاک شریہ الف  
 سدا کھور کرشن پانہ بخش  
 کران ساری رشک تس نیک بخش  
 پیاری بخش بہتہ اوتار وقتک - پیاری کھو چھس سدا یاد وقتک  
 اکس ستر اکھ بہتہ لول یا گراوان - یہ دشتہ چھی وزیرن ہوش روان  
 سدا سن بیالو تو ملیج ڈالو کڈ نئی  
 کرن پیش کرشنہ لالس نس تھنی تھنی



کرشن لالس موٹھ کیتھ سادہو آو - کھوان کو تہہ کران انس نہ ٹھہرو

۳۰ - مرگے کا تو بیائے کا جنت میں گھر ہے اگر جنت جائے تو دنیا میں گھر ہے



एषा केचिद्विज्ञासांख्ये बुद्धिर्यो त्विमां भृशु ।  
 बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ॥

मोनुन बा शान् शीकत पूरि हशमत ।  
 यि छुसना बालु पानुक खेहे त उलकत ।  
 मुदामा खोर कृष्णन पान् तस्तस,  
 करान सारी रशक तस नेक बखतस ।  
 यपोयं तस्तस बिहिथ अबतार वक्तुक  
 हुपायं किन्य छुस मुदामा यार वक्तुक ।  
 अकिस सूत्य अख बिहिथ लोल वांगरावान  
 यि डोशिय छी वंजोरन होश राखान ।  
 मुदामन व्यात्य तोमलुच डाल्य कंड नेन्य  
 करुन पेश कृष्ण लालस युस थनी थन्य ।  
 कृष्ण लाजस मोठा ख्यत स्वाद छुव आव  
 ख्यवान गव माह करान आसस न् ठहराव ।



इतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्

तस्मादुचिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥३७॥ तस्मात्वालाभी जययौ

کرسن لالین پرتھس سور حال احوال۔ زمیں باجین مار زلت روپیہ نئے مال  
سدا و نینہ لوگ بس دو کین چم۔ چھ اٹھ نر تھ گدازان سات کیوں  
سوخن زیمٹھان کے دفتر بڑھ آئے  
انتھ پٹھکن نہ روزان راند سرس



سدا ما کرشنه لاس ستو همدم  
سدا ما تس نه گر بارک کهنه غم  
سمه کافی گر صها آتھ کارو بارس - بهوان رو خسته چه آخر بار بارس

جہ کہ کوشش ہو اس میں کوئی راہ گاہ نہ ہو اس لئے میں اس کے رکاوٹ کہتا ہوں۔



यासिमां पुषितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः ।

वेदवाद्गताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः । ४२ ।

कृष्ण लालन प्रहस सोर हाल ग्रहवाल,  
जमीन, जायुन, जिरात, रोपयि तय माल ।  
मुदामा वननि लौग "बसडोकुहन छम,  
छि अथ्य मंज सथ गुजारान साथ तय दम ।  
सोखन जेठान गेय दफतर बरिथ आय  
अत्यथ पथ कुन नु रोजान राज सिरसाय ।  
मुदामा कृष्ण लालस सूत्य हम दम  
मुदामा तस नु गरबारुक कुह्य गम ।  
समय काफो गछान अथ कारुबारस,  
हवान रोखसथ छु आ'खु'र यार यारस ।



नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।

कुरुनन्दन । बुद्धिरेकेह व्यवसायात्मिका भयात् । स्वल्पमभ्यस्य धर्मस्य प्रायते महतो

کراں روخصتہ کرشن جی تہس فقرے۔ سدا س ظون ز شری اسن مہ بیکس  
 پھران کو تہ سدا کرشن لائن۔ سواری پیچھ کھستہ دراو از گرس کن  
 دزل برو نہ برو نہ چھ سو نے دف تہ دادم  
 وناں ساری ساری سدا راجہ جو چھم  
 ولتہ زراف تہ سو نہری تاج بر سر۔ سدا از شہن ہندشہ برابر  
 گرس کہتہ ووت گاس منر سدا  
 خبر کیا چھس ز گاس منر سپد کیا  
 وچھن گا ہا کران تہس پو پیر ز گتہ۔ اُس تعظیمہ سان ماوان گرج و تہ  
 ہنہ برو نہ کن پکتہ ڈیش عمارت  
 عمارت چھا! سو رگ چھا باغ جنت  
 خبر لے دوا عیال س تم رستہ ای۔ دوان زن خور غلمان سو رگ منری درو  
 سدا ماں پانہ حارن خواب دیشان  
 یہ سوئے کیا وچھاں چھس چھسینہ زان  
 بے ما چھس رو و مت با بیگانہ گمت۔ پیچھ دو کس چھ اندہ پیلین بنیوت  
 اندہ رستہ = پیچھ کر تہ۔ ۲۔ سو رگ جنت = پیلین = شاہی محل۔



करान रोखसथ कृष्ण जो तस फकीरस  
सुदामस जोन जि सुयं आसन में बेकस ।

फिरान कोताह सुदामा कृष्ण लालुन  
सवारी प्यठ खसिथ द्राव अज गरस कुन ।

वजान ब्रोंह ब्रोंह छे सुरनय दफ तु डुम डुम,  
वनान सारी सुदामा राजि ह्यव छुम ।

वेलिथ जरवफ त' सोनहेर्य ताज बर सर,  
सुदामा अज शहन हुन्द शाह बराबर ।

गुरिस बयष वोत गामस मंज सुदामा,  
खबर क्याह छस जि गामस मंज सपुद क्याह

बुछिन गामुक्य करान तस पोंपरिन्य गथ,  
अमिसताजोमु सान हावान अरुब बथ ।

हना ब्रोंह कुन पकिथ डोशन अमारथ  
इमारथ छा! स्वर्ग छा! बागि जनथ !

खबर लंज वल्य अयालस तिम चसिथ आय,  
दवान जन हरु गिलमान स्वर्गु मंज्यद्राय ।

सुदामा पानु हारान खाव डेशान,  
यि सोरुय क्याह बुछान छुस केहं नु जानान ।

ब' मा छुस रोवमुत बेगानु गोमुत,  
येत्यथ डोकस छु अज पैलस बन्योमुत ।

तथापहृतचेतसाम् ।

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां

॥४३॥

क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥४३॥

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् ।

وچھن آستنیو بہتھ منتر محلہ خانس  
کران پوزا، بران لول کرشنہ لاس



سدا چس دپان آخر یہ کی کوڑ۔ یہ کی پرشس بہ پڑھنے لول سچہ بور؟  
وڑھس آستنیو، امی کرشنن لور کول۔ وندس شری باڑ مالین مول تے موج  
عبارت، باغ، مندر، فرش، محفل۔ تمی کسہ شہر عنایت یوت جبل جبل  
کرشن یس پیچہ کران چھے مہرانی۔ بنان سون ہیر لون انسان فانی

وہ انسان ہر ہم کا گئی ان سے کہ اسے کرم کا ندوں یہ کب دھیان بنے



वृद्धिन आशान्य विहिथ मंज महल खानस,  
करान पूजा बरान लोल कृष्ण लालस ।

सुदासा छुस दपान आखुर यि कम्य कोर ?  
यि कम्य पुरषान में प्रहृनय लोल युथ बोरे ।

वृद्धस आशान्य "अमो कृष्णन बोरुम लोल,"  
बन्दस शय बाच माल्युन मोज तय मोल ।

प्रमारथ, बाग, मन्दर फशि मखमल,  
तमो कर यिछ अनायथ यून जलजल ।

कृष्ण यस प्यठ करान छुय मिहरबानी,  
बनान सुन हेरि बुन इन्सानि फानी ।

اکھ سدا چاہیئیں پیٹھ کر دیا مولی دزن  
اکھ دلہ چہایتھنہ بسکیں در تہند کنول چرن  
یو دیشر حاکہ پائیں اندر تھاون کرشن پرلون کرشن  
شرط اول اتھ مقاس چھے مینج زرفیج لکن

अख सुदामा क्हा येमेस प्यठ कर दया मोरली दरन  
अख विला क्हा यथ नु बसकीन दरत हेंद कवेल चरन  
येद यदुख पानस अन्दर थावुन कृष्ण प्रावुन कृष्ण  
शर्ते अवल अथ सकामस क्य मनचे, रहेंचलगन ।

यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके ।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।  
विजानतः ॥४६॥  
ब्राह्मणस्य विजानतः ॥४६॥  
वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥४६॥  
तान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥४६॥

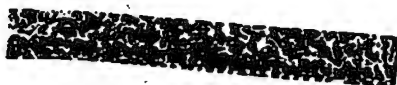


کرشن کو دو ن سمت گزشتک سمندر  
 اوتته و اوتته بنان پرتقه قطرساگر



غریبن ہنسن ہند مال گویاں  
 یمن کوچہ شہر تہمن ہند لال گویاں  
 یمن زخمس اندر پیترن پیوان یچہ  
 تہمن پرشن سٹھارت فال گویاں

गरीबन, मुफलिसन हुंद माल गुपाल ,  
 यिमान को छ हंर तिमन हुंद लाल गुपाल ,  
 यिमान जनमस अन्दर प्यतरुन प्यवान यह  
 तिमन पुरुषण स्यठा रुत फाल गुपाल ॥



कृष्ण गव दुन समुत गछनुक समन्दर  
 आतिथ वातिथ बनान हर कतर सागर ।



گلن ہند سمت چھانچھلاوا کرشن جی  
 عجب گلستانہ بناواں کرشن جی  
 یمن آسہ پتر پچ تہ پتر پچ دلس چھ  
 تمہن امریت کیالہ چاواں کرشن جی  
 کرستانہ پارسی تہ ہندی سبکھ مسلمان  
 نظر کنی یمن پیٹھ چھ تر اوں کرشن جی  
 دوس شیکرس منز تفاوت پشارہ  
 بشر آدنک چھ رلاواں کرشن جی

عراق



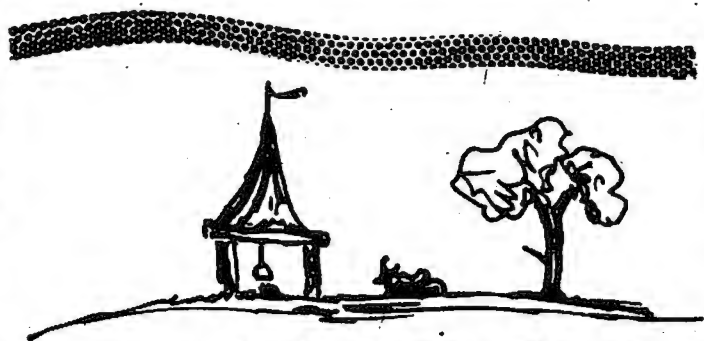
## कृष्ण जी

गुलन हूंद समुत फांफुलावान कृष्ण जी  
अजब गुलिस्ताना बनावान कृष्ण जी ।

यिमन आसि प्रेयमुच तु पजरुच दिलस छिह  
तिमन अमरितक्य प्याल चावान कृष्ण जी ।

किरस्तान्य, पारस्य त हेन्य सिख मुसल्मान  
नजर कुन्य यिमन प्यठ छु त्रावान कृष्ण जी ।

दोदस शेकरस मंज इशारा तफावत  
हिशर आदनुक छुय रलावान कृष्ण जी ।



यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।

तदा गन्तासि निवेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥ श्रुतिविप्रतिपत्त्या ते यदा स्थास्यति निश्चला ।

अर्जुन उवाच  
का माया समाधिस्थस्य केचन ।  
स्थितधीः किं प्रमायेत किमासीत ब्रजेत किम् ॥

دئی ہند نہر، تفریق تڑھیٹ الیش  
چھ موہری بجاو تھ مٹاوان کرشن جی



کتن منتر چھپس تھ موہری اثر چھپس  
دلن پیم نہ نہہ تم لراوان کرشن جی  
یہ متھرایہ چمنایہ گنگایہ رادھا  
سمے گو مگر توتہ کاران کرشن جی  
سیہ ہرہ والیو تمس نش شوہر لوہ

کھوٹس کیمپا چھ بنواوان کرشن جی  
بران لول گوپی تمس شوہر شائے  
تمن منتر چھ دوہ دین گزائن کرشن جی

نشری بھوان کا ارشاد ہے  
سہ مرکب دوہ پیہ ستر کوڈ دھاسون چھ بنان



॥३५॥ एतन्मनुष्यमनुः प्रकृत्यगता

दुई हुंद जहर तफरुक्च छेट अलायिश,  
छु मुरली बजाविथ मिटावान कृष्ण जी।

कवन भंज चवर कुस तु मुरली असर कुस  
रलन यिम नु जाँह तिम रलावान कृष्ण जी।

यि मथरा, यि जमना, यि गंगा, यि राधा,  
समय गव मगर तोति गारान कृष्ण जी।

सियाह हृदयि वाल्यव तमिस निश शोजर लोब  
खोटिस कीमिया छुय बनावान कृष्ण जी।

बरान लोल गूपी तमिस श्रोचि शाने,  
तिमन भंज छु दोह दन गुजारान कृष्ण जी।



श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।

आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।

٦  
 ٧  
 ٨  
 ٩  
 ١٠  
 ١١  
 ١٢  
 ١٣  
 ١٤  
 ١٥  
 ١٦  
 ١٧  
 ١٨  
 ١٩  
 ٢٠  
 ٢١  
 ٢٢  
 ٢٣  
 ٢٤  
 ٢٥  
 ٢٦  
 ٢٧  
 ٢٨  
 ٢٩  
 ٣٠  
 ٣١  
 ٣٢  
 ٣٣  
 ٣٤  
 ٣٥  
 ٣٦  
 ٣٧  
 ٣٨  
 ٣٩  
 ٤٠  
 ٤١  
 ٤٢  
 ٤٣  
 ٤٤  
 ٤٥  
 ٤٦  
 ٤٧  
 ٤٨  
 ٤٩  
 ٥٠  
 ٥١  
 ٥٢  
 ٥٣  
 ٥٤  
 ٥٥  
 ٥٦  
 ٥٧  
 ٥٨  
 ٥٩  
 ٦٠  
 ٦١  
 ٦٢  
 ٦٣  
 ٦٤  
 ٦٥  
 ٦٦  
 ٦٧  
 ٦٨  
 ٦٩  
 ٧٠  
 ٧١  
 ٧٢  
 ٧٣  
 ٧٤  
 ٧٥  
 ٧٦  
 ٧٧  
 ٧٨  
 ٧٩  
 ٨٠  
 ٨١  
 ٨٢  
 ٨٣  
 ٨٤  
 ٨٥  
 ٨٦  
 ٨٧  
 ٨٨  
 ٨٩  
 ٩٠  
 ٩١  
 ٩٢  
 ٩٣  
 ٩٤  
 ٩٥  
 ٩٦  
 ٩٧  
 ٩٨  
 ٩٩  
 ١٠٠



١  
 ٢  
 ٣  
 ٤  
 ٥  
 ٦  
 ٧  
 ٨  
 ٩  
 ١٠  
 ١١  
 ١٢  
 ١٣  
 ١٤  
 ١٥  
 ١٦  
 ١٧  
 ١٨  
 ١٩  
 ٢٠  
 ٢١  
 ٢٢  
 ٢٣  
 ٢٤  
 ٢٥  
 ٢٦  
 ٢٧  
 ٢٨  
 ٢٩  
 ٣٠  
 ٣١  
 ٣٢  
 ٣٣  
 ٣٤  
 ٣٥  
 ٣٦  
 ٣٧  
 ٣٨  
 ٣٩  
 ٤٠  
 ٤١  
 ٤٢  
 ٤٣  
 ٤٤  
 ٤٥  
 ٤٦  
 ٤٧  
 ٤٨  
 ٤٩  
 ٥٠  
 ٥١  
 ٥٢  
 ٥٣  
 ٥٤  
 ٥٥  
 ٥٦  
 ٥٧  
 ٥٨  
 ٥٩  
 ٦٠  
 ٦١  
 ٦٢  
 ٦٣  
 ٦٤  
 ٦٥  
 ٦٦  
 ٦٧  
 ٦٨  
 ٦٩  
 ٧٠  
 ٧١  
 ٧٢  
 ٧٣  
 ٧٤  
 ٧٥  
 ٧٦  
 ٧٧  
 ٧٨  
 ٧٩  
 ٨٠  
 ٨١  
 ٨٢  
 ٨٣  
 ٨٤  
 ٨٥  
 ٨٦  
 ٨٧  
 ٨٨  
 ٨٩  
 ٩٠  
 ٩١  
 ٩٢  
 ٩٣  
 ٩٤  
 ٩٥  
 ٩٦  
 ٩٧  
 ٩٨  
 ٩٩  
 ١٠٠



॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥ ॥१५॥

## होली

अर्जुन सनार को प्रिय होली गंधान  
फुटतंग अंग अंग रंगन मंत्र रंग ब्रान  
केशने बिकेना लकड़ चो मत्तु वोल सन  
सारे ने रूस अंदर मोदी गंधान

अज हि सन्सारकय पुरुष होली गिन्दान  
फितरतुक अंग अंग रंगन यंज रंग थरान  
कृष्ण! यिरवना लुरव हि आयुन्य वोल सनस,  
सारिन्य रूहस अन्दर मोरली गुजान  
यमिस आसि वस जाजिमच लोलु नारन  
बिलाशक तमिस परजनावान कृष्ण जो ।

लक्षस हुब, वञ्चस मंज छु तस शोलुनावान,  
बयावान जरस छुय बनावान कृष्ण जी ।

यिमव पोम्परिन्य गथ करिस सिरियि पानस,  
तिमन छुय पनुन जलव हावान कृष्ण जी ।

मनु'व रास्ती नजरि पौ'ज ओनु'हावान  
कृष्ण जो सुदामा, सुदामा कृष्ण जी ।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।

यतो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः ।

इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥

निराहारस्य देहिनिः ।

विनिवर्तन्ते विषयाः ।

इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तत्त्वप्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥



تسد سربہ پیش، وڈ وین، وحشین تا  
 رھناہ چھا تمین، چھ پالان کرشن جی  
 حسد خون مار، ششمہ ہوت نارنایان  
 چھ زلنگ زگت وڈرہ پیارن کرشن جی  
 یمن تاپہ کرلو چھ میڑ شورہ کر مڑ  
 تمین سیکہ لین پیچھ چھ بارن کرشن جی  
 چھیلتھ رھن یو کام، کرود، موہ، انکار  
 پوہتر تمین جان جنان کرشن جی

۱۔ شہوت ۲۔ نرکھ ۳۔ طمع ۴۔ غورور ۵۔ سرہیہ پیار

۱۔ سو اس اپنے دل اور لگا مجھ میں دل تو سرشار ہو لوگ میں مقبل

پیر کا رونا، اتر کالی کا ہے ہوو خفا اسی کہوئے عقل ہو بائمان جو زل ہوئی عقل آیا رونا



सङ्गतान्जयते कामः कामात्कोषोऽभिजायते ॥

क्रोधान्क्रवाति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः ।

तसुन्द स्रेह पशन, बुडबुन्यन, वहशियन ताम,  
छयनह छा तिमन यिम हु पालान कृष्ण जी।

हसद खूंखार, खशम होत, नार चापान  
हु जगतुक जगत वोन्य चे प्रारान कृष्ण जी

यिमन ताप क्रायव छे भेच शोरु करमुच  
तिमन सेकिल्यन प्यउ हु बारान कृष्ण जी।

छेलिथ हून यिमव काम, क्रध, भोह अहंकार,  
पवितर तिमन जानि जानान कृष्ण जी।



स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।

सङ्गस्तेषूपजायते । विषयान्पुंसः ध्यायतो तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ बोधे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥



یمن کہنہ نہ آسان یمن دل پریشان یہ تمن بیکس ہند چھ سامان کرشن جی

یہ تھن ہو مجسم چھ حنک جالک  
چھ فاضل دلس منز بساوان کرشن جی





प्रमत्तचित्तस्य ध्यायि ब्रह्म विदुः ॥ ६५ ॥

چھ برہمن بھرم - گیان ضبط راستی  
 لبی - حق شناسی تہ پاکیزگی  
 تغفل ترک - عیش و عشرت حرام  
 طمع ترک نہ تھاؤنی چیلنی من نمی  
 کرشن (گیتا ۱۲)

छ ब्राह्मण धर्म-ज्ञान जब-त रास्ती,  
 लबुन्य हक शनासी तु पाकीजुगी  
 तगोफुल तरक आश ब अशरत हराम,  
 तमाह, चल न पाबुन्य छलुन्य मनहंमो  
 (गीता)

यि मन काँह नु आसान, यि मन दिल परेशान,  
 ति मन बेकसन हुँद छ सामान कृष्ण जो,  
 यि थन्य होव मुजसुम छ हुसनुक जमालुक  
 छ फाजिल दिलस मज वसावोन कृष्ण जो,

आत्मनिर्विधेयध्याना प्रसादमधिगच्छति ॥ ६४ ॥ प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपायतः ।

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।  
 न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥



بالسرے ہند ساز گو میانین کنن  
 چھس اوے کنی کرشنہ شبدن کن تھون  
 کرشنہ شبدو بخشتم گنگایہ جل  
 تھمہ رھم اتھ منر کو دم شود تن بدن



نوٹ:- ایشبد = لفظ ۲۔ بخشتم = دینا ۳۔ جل = آب ۴۔ پونی ۵۔ شود = خالص



ग निया सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संतपी ।

यस्या जाग्रति भूतानि सा निष्काम कृपावती भूतः ।



महर्षी कुरे कर्शनं सदा । त्रिजगत्स अन्तर्बुद्धिर्नित्यं  
बनान् जगत्सु दयालु यार यारस्य छि कृष्णन दोस्ती अमृत सरापा ।

मिहरबानी करय कृष्णन, सुदामा !  
चु छुल्ल जगतस अन्दर बेंड नेक बहता  
बनान छा युय दयालु यार यारस्य  
छि कृष्णन दोस्ती अमृत सरापा ।

वांमुरी हुन्द साज गव प्यानन कनन  
छस अयय किय कृष्ण शब्दन कन बदन ।  
कृष्ण शब्दव बल्लशुहम गंगायि जल,  
बाह कृष्णम अय मंज कोरुम शेष तन बदन

निष्कामाणां हि श्रुता यन्मनोऽनु विधीयते ।

तदनु श्रुति प्रज्ञां वायुनां वसिष्ठाभ्यसि ॥ ६७ ॥ तसाधस्य महाबाहो निगूहयानि सर्वशः ।



بالہ پانس لگو تے اندھیمون آے

نرو وندے! مہر کی تلا اندھ کرشنہ والے

چاہے حُسنک پرتوہ دیدن کُشش

چون پیکر جذبہ: پُتر بچہ سریرہ کُراے

چاند حُصمت چاند عظمت اچاند کتھ - کہہ نہ سیمیں منتر تہہ ہوئی ساڈراے

عظمت = بزرگی

نکھ = وقت

یہ سندرہ میں غائب ہوں دریا ہزارا ہزار ہے گا وہ لکھنؤ اور باوقار



## मोरलीदर

बालु पानस लंग्यतनय अज म्योन आय,  
जुव वन्दय ! मोरली तला अज कृष्ण वाय ।

चानि हुसनुक परतवा दीदन केशिश  
चोन पयकर जजवु प्रेयमुच सियि काय ॥

चान्य हशमत, चान्य अजमथ, चान्य छव,  
कांह न समयस मंजु जे ह्युव यी सान्य राय ।



(१) आय--वाँसि हुंद वल, (२) परतव--जलव,  
दीद - अछ,

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं

समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् ।

सर्वे प्रविशन्ति सर्वे तद्वत्कामा यं

यद्वत् ।

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः ॥७०॥

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति । स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमुच्छति ॥७१॥

چانہ موہ لی ہنر دے! اوقاد تھے  
داس پیاراں چھی تہ از کا سکھ انیالے

اکھ دمہ چشمِ اندر کرشم قرار !  
عمر لوسم تری وچھان کر میون پایے

پایے چار

تہے چھہم پریمک صنم، روٹک ہرش  
سارے لول باکراون چون دے

دے ہش

یوت تروہ سو ندر بناوتھ چون موکھ  
حادثن گو پانہ کار پگر خوداے

ساسہ بدی رنگ بدلو فی رو دم زخم  
یس زوس منتر چھاکھ بستیہ سے اکھ ہول

چانہ پترچ چھہم منس لچتر مہ چھم  
لولہ برتو! فاضلس چھے چاڑی

لے ہریم

شری جگوان نے فرمایا  
ساروں ادھیائے

ایسن آرجن! امان چھہم پانے ہونے نامتری ذات میں لول کا



मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चित्पतिः सिद्धये । यत्तामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेति तत्त्वतः ॥

चानि मोरली हुंज द्रुय अवतार चय,  
दास प्रारान छी च अज कामुख अन्याय ॥

अख दमाह चश्मन अन्दर करतम कगार,  
उमर् लोसम चैय वुछान कर म्योन पाय ।

चय छुहम प्रेयमुक सनम, रुहुक हर्ष,  
सारिनय लोल बांगरावुन चोन दाय ॥

यूत चोर सोन्दर बनाविथ चोन मोख,  
हारतन गव पानु काशीगर खोदाय ।

सासुवैर रंग बदलवुन्य रुदिम जन्म,  
यस जुवस मंज छुल बेसिथ मुय अख 'बेवाय' ॥

चानि प्रेयमुच छिह्य मनस लेजमुच मै छम,  
लोल बेत्यो । 'फाजिलस' छय च्यान्य माय ।

(१) आय---वांसि हुंद वल, (२) परतव---जलव,  
दोद---अछ,

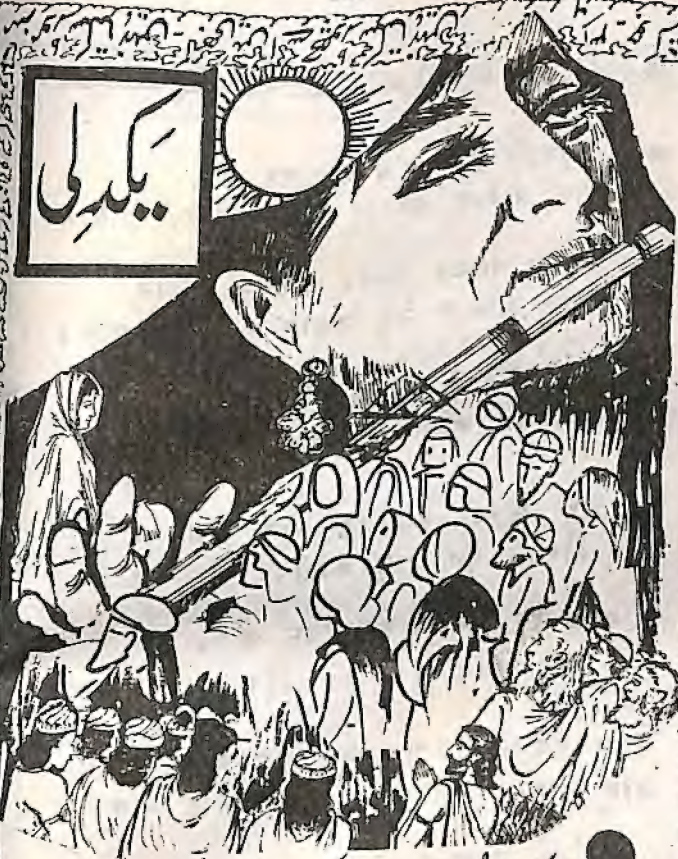
(१) पाय---चार, (२) हर्ष---सरुर,  
(३) दाय---मशवर, मोख---बुध, (५) माय---प्रेम,

अथ सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।

असंख्यं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तन्मृणु । सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः ।



یکدیگر ہندش گویان چھے بانسری  
یس کنن گو و منہ لوگ جے جے ہری  
من پو مٹر یس سپد یس مے چھ شاہ  
کیاہ مسلمانن کر یس کیاہ کافی



मवभूतास्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः ।

सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥ ३१ ॥

तस्माद् न प्रणमामि स च मे न प्रणम्यति ॥

کُنْیِ یَسْ نَظَرْتَسْ چِه گِیَانِ وَنَانِ !  
 تَمِیسْ نِشْ نِه چِنْدَالِ بَرِہَمَنْ زُجَانِ ॥  
 دُوبِیْ ہُنْدِ سِیٹَاہ دُورِ یَحْسَاسْ تَسْ !  
 سَہ گَاوِ ہُوْن تے ہُوَس چھ یِکِسانِ وِہْدَانِ

(گیتا جی ۱/۵)

گیتا ۱/۵

कुन्ती यस नजर तस छि ज्ञानी बनान  
 तमिस निश न चंडाल, ब्राह्मण ज जाना  
 दुई हुंद स्यठाह दूर इहसास तस  
 सु गाव, हन, तय होस छु इखसान व्यंदान

(गीता)

यकदिलो हुंद शह ग्यवान छय बांसुरी  
 यस कनन गव बननि लोग “जयजय हरी” ।  
 मन पवितर यस सपुद बस सुय छु शाह,  
 क्या मुसलमानी करघस क्या का'फ़िरी ॥

यश्चन्द्रमसि यच्चाग्रौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥ ३२ ॥ यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।



بالہ پانس لاگئے جمائے چھتی  
 کرشنہ لالو! بس بیٹی سمکھکتی  
 پانہ از گنگا یہ ہند جل باگراؤ  
 چاوتکھ امرت مہہ ہوو تریشے ہتی  
 یم نشا طس، شالماس پوس بھلو  
 زاری زاری تم لاگئے کاسے پتی





نو آگر سر یہ موکھ چھے آنہ پوٹ  
 میریون پانس پرون ہندی کہہ دتھی  
 خورہند پیکرتہ تھنی پوچھے شریہ  
 نالہ رٹھنڈ اکھ دہہ روز تم اتی  
 چون آکار چھم ستن برین بہ اش  
 پیم شعور کی بر دہے تھویئے دتھی  
 دل چھ بھر سٹ تے کرو دھ از سمیک سبھلو  
 بیر اکھ اکر سٹھوان سمیک متی  
 چھی فدا پادن گیتی پمپوشہ سر  
 کھیل چھ آسن ہیچہ بہتھ آسے کتی  
 اکھ بنو موہلی دزن آدیش پوز  
 فاضلا است دوپ چھ داس ہندی



मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय ।



گنگا یہ پیچھ

رَدھا وَنان چھ نا تھس۔ دود ماچھ ہو ژہ پیکر  
 درشن مہ کا ل د کھنا اچھ چانہ دودرک شُر  
 اچھ میانہ لوسہ وائس۔ گنگا یہ پیچھ ژہ پیارن  
 موہرلی شبد گڑھان چھ۔ گوش ژہ نتیجہ بھٹس تر  
 اُندی اُندی ژہ رقصہ باپتھ۔ گو موہر کھیول انتھ تھو  
 یم چانہ لولہ پیرتھ۔ رنگین پیر تہ زلیور  
 ۱۔ دودر = فراق ۲۔ گوش = کنن ۳۔ زلیور = گہنہ

۱۰۔ سن ارجن میں ہوں زنج ہر رست کا، میں وہ زنج ہوں جو نہ ہو کا فنا۔



१११। १११। १११। १११। १११। १११। १११। १११। १११। १११।



राधा वनान छे नाथम—दुद, माछ ह्यु ब चे पैकर  
दशुन मे काल्य दिखना! छुम चानि दूरि रुक शर ।

मल म्यानि लोसु बीसन— गंगायि प्यठ चे प्रारान  
मुरली शब्द गछन छिम गीशन तुं यथ बंठिस तर ।

अन्ध अन्ध चे रकसु बापय कम्प मोरु ह्योल अनियथोव  
यिमचानि लोलु पूरिय रंगीन पर तु जेवर ॥

ये चैव सात्विका भावा राजसात्तामसाश्च ये ।  
मत्त एवेति तानि चिद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥ १२ ॥

कामरागविबर्जितम् ।  
चाहं बलवतां बलं ।  
तेजस्तेजस्विनामहम् । १० ।  
बुद्धिबुद्धिमतामसि

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।

نے

( نے چھ بہانے .... "مورلی شہزادہ اسہ گوکنن ورن چھ راوہا کرشنہ ہے آوہ )

گس تام وایان ! لکھ چھ دیان نے چھ وزان نے  
گوپالہ تریہیم ویدی چھ دیان  
نے چھ بہانے ..... نے چھ بہانے

تصویر آتش خانہ مجازس چھ دیان ڈول  
منز ناہ برہمن طور سنگر  
تو وزان نے ..... نے چھ بہانے

نے نغمہ شیرینی - من چھ برہمان - زوچھ زوان کل  
یتھ نغمہ پرائن ہمعرقک  
سریہ چھ بران نے ..... نے چھ بہانے



(नय छ बहानय

“मुग्ली गब्दा गव असि कनन  
वनन छि राधाकण्ठ है आव”

कुस ताम वायान! लुल छि दपान नय छि वज्जानय,  
गुपाल त्रे यिम बेद्य छि दपान,  
नय छि बहानय—नय छि बहानय

तसवीर आतशखान मजाजस छु दिवान डोल  
मंज नार ब्रहेन तूर संगुर  
तोति दजान नय—नय छि बहानय

नय नगम् शोरनिमन छु ब्रमान, जुव छु जुवान कल  
युथ नगम् प्रावुन मायफतुक  
श्रह छे बरान नय—नय छि बहानय ।

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत् ।

साहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम् । ३ ॥ ३ ॥ गुणमयी मम माया दुरत्यया ।

تیتھ گیان حاصل پید، تھو کہ زانی اندر من علم  
 سوہ زان ناوتھ اوم تہ کنے  
 حق چھ پران نے ---- نے چھ بہانے ۲۱ الشہ

زن سوز و نس زونگ چھ نگان، لام کن لام  
 من وینہ نگان تاو ہتین  
 شولہ نرمان نے ---- نے چھ بہانے

ون سور گرتھتھ روہ ہٹاہ، تروہ بہتھ لوب  
 تھو پانہ تھلان والہ توے  
 آسہ گر ان نے ---- نے چھ بہانے

فاضل! شریک ساز کنے، سوز مگر بیون  
 گو پالہ! یوے لولہ ہتین  
 منز چھ نرمان نے ---- نے چھ بہانے



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

त्युथ ज्ञान हासिल सपदि बवख जून्त्य अन्दर मन  
सुय ज्ञान हाविथ ओइम तु कुनुय  
'ह' छे परान नय—नय छे बहानय ।

जन् सोजवनस ओंग छु लगान लाम लूकन लाम  
मन वुहनि लगान ताव हत्यन  
बोलु छटान नय—नय छि बहानय ।

बन सूर गच्छित रोजि हंटा चूरि बिहिय लेब  
सैथ्य पानु थलान वालि तबय  
भासि मरान नय—नय छि बहानय ।

'फाजिल' शरीरक साज कुनुय सोज मगर व्योनि  
गोपालु योहय लोलु हत्यन  
मंज छे सज्जान नय—नय छे बहानय ।

नोट— ग्यान—ज्ञानकारी, अकल  
ह—ईश्वर, अल्लाह ।

अतो जिबसुखेयी ज्ञानी च भरतपम ॥ १६ ॥

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।



वं तं निधममाद्याय प्रकृत्या निधत्ताः स्वया ॥



## पेज अवतार

मे छा इन्कार माता! क्याजि प्रुछयम  
मे लय गोय गांव मातायि सूत्य हरदम ।

दोपुथ दुद मा सां चोथम चूरि चूरे  
हतय पेज बोजतय मलरे तु टूरे ।

दुदुवय नटच चथ ति रुजुम कल म्य अथ कुन  
योहय गव ठानु वोथ भगवानु सुन्द द्युन ।

या यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धया चितुमिच्छति । तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥

वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः । १९। कामस्तस्ते हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।



نیر گو سر پہ چھا پوشیدہ روزان  
کرشن پوز و نہ چھا نہ نہ کانسہ کھوڑان

بہج پندرچ نہ روزان و انسہ پابند  
لوکٹ بالک انی کو برت عقمند



یہ دھرتی گاؤ ماما پیٹھ چھ توشان  
دوان دود تھن کرشن آخر بناوان

کھوان تھن امریت کوٹو واسیہ چاوان  
امس جنگ ایشور پدوی چھ دیاوان

سلس وہ ذوق یقیں سے کرتے جسے دیوتا مان کرے دیوتا مان کرے



पजर गव सिरियि छा पूशोद् रोजान  
कृष्ण पौज वननु छा जांह कौसि खोचान ?

नहेज पजरुच न रोजान वीसि पावंद  
लुकुट बालुक पमी कोरमुत अकलमंद ।

यि धरती गांव माता प्यठ छि तोशान,  
दिवान दुद, थन्य, कृष्ण माखुर बनावान ।

ह्यवान थन्य अमृतक्य नटच दाम् चावान  
अमिस जग ईश्वर पदवी छु द्यावान ।

लभते च ततः कामान्भयैव विहितानि तान् ॥ अन्तवचु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।

स तथा श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः । परं भावमजानन्तो ममाब्जयमनुत्तमम् ॥२४॥

کرشن اکھ بالکا پزُرک مجسٹم  
فخر زگتس یوہے اوتار۔ آدم

کرشن بتر اڑ پیٹھ صلیج علامتھ  
یوہے اکھ پوشونی امیچ کر امتھ



کرشن گویس چھ موہری منزسہ اہام  
یُمیک اکھ اکھ صد لوکن چھ پاغام

کرشن گو ظلمہ ایوانن سوہ لگرے  
یُمیک دولاہ اپنرس تالہ تڑ کرے

کرشن گو مقصدک نردیک نزل  
امس نش سارہ نے حاصل کئے دل

یہ دھوکے والی باتیں ہیں۔ انھیں نہ مانو۔ یہ سچ ہے کہ کرشن نے اپنی تمام مخلوق کو اپنا وارث بنایا ہے۔ اس لیے کہ وہ ہر شخص کے دل میں مقیم ہیں۔

یہ دھوکے والی باتیں ہیں۔ انھیں نہ مانو۔ یہ سچ ہے کہ کرشن نے اپنی تمام مخلوق کو اپنا وارث بنایا ہے۔ اس لیے کہ وہ ہر شخص کے دل میں مقیم ہیں۔

۲۵۔ جو میں یوں کہتا ہوں کہ میں نے ہر شخص کو اپنا وارث بنایا ہے۔ اس لیے کہ وہ ہر شخص کے دل میں مقیم ہیں۔



॥ अथ श्री कृष्ण प्रह्लाद उवाच ॥



कृष्ण अख बालुका पञ्ज एक मुजस्सम  
फक्कर जगतस योहय अवतार आदम ।

कृष्ण वुतराच प्यठ सुलहुच करामत,  
योहय अख पोशिवय्य अमनुच अलामत ।

कृष्ण गव यस छु मुरली मंज सु इलहाम,  
यस्युक अख अख सदा लूकन छु पंगाम ।

कृष्ण गव जुलम् अयवानन सु बगराय  
यस्युक दंसलाव अपजिस तालि तंच काय ।

कृष्ण गव मकसदुक नज दीक मंजिल  
अमिस निश सारिनुय हासिल कुनुय दिला ।

मृदोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ५ वेदाहं सयतीतानि वर्तमानानि चार्जुन ।

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।

کُرشن گو دُون سَمَتِ گَرْشَنک سَمَنَدَر  
 اَوْتَمَح وَاَتَمَح بَنان پُر تَح قَطَرِا گَر  
 کُرشن گو یَکِ دِلِ بُنَد اکھ سُه اَکَر  
 وَزَن سَیَح نَش چُھ بَدِھ مَوْتِاَل تے سَر  
 کُرشن گِیتا یَہ بُنَد گَہ تے مَنجِا ش  
 گُٹن تارِ پَکین مَنزِ سَریہ پُر اَکاش  
 کُرشن گو اکھ پو سَر رُوپ پُر سِیمک  
 تَصَوُّر دِل پَسَند سو نَد شَرِپِک  
 کُرشن گو زَلزلہ کُرو دَس تہ کَاس  
 سُه خَالِص سو ن کُرا ن کَم پا یَہ تَر اَس  
 کُرشن ہر دِج چُھ پَنز اَپنِہ دَہری  
 اَنکاس بَنان اَنکاس اَی

साधियुगाधिदेवं मां साधियुगं च ये विदुः । प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्गुरुवेत्तसः ॥ ३० ॥

कृष्ण गव दुन समुत गछुनुक समन्दर  
आतथ वातिथ बनान हर कतर सागर ।

कृष्ण गव यकदिली हुंद अख सु आगुर  
बुजान यथ निश छु मदमोत ताल तय सुर ।

कृष्ण गीतायि हुंद गाह तय मनुच आषा  
गटन तारीकियन मंजु सिरियि प्रगाश ।

कृष्ण गव अख पवितर रूप प्रेयमुक  
तस्सव्वुर दिलरुवा सोंदर शरीरक ।

कृष्ण गव जलजला क्रुधस तु कामस  
सु खालिस सुन करान कम मायि वामस ।

कृष्ण हवमिच छु पज्ज आईनु दोरी  
अहंकारस बनावान इन्कसारी ।

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।

ते द्रव्यमोहनिष्ठका भजन्ते मां ददव्रताः ॥ जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।



کرشن گو تھن، دوہج مانے، شہل سرہ  
 موہن، لوہس کنی برہہ، ز الوہی رہہ

کرشن گو پوشون گنگاپہ ہند جل  
 چھلان ہندس، مسلمانس دیک مل

کرشن گو فکر تارن والنہ ہند ویر  
 سہ چھا اکوند، سہ گو پرتھ کانہہ ہند ویر

کرشن گو استما ست استما بس  
 تھس سولے چھ حاصل ہے یہ گویس

۱۔ مانے = محبت    ۲۔ برہہ = شولہ (شعلہ)    ۳۔ موہ = بھوئے میوئے  
 ۴۔ طمع    ۵۔ ویر = جاداد    ۶۔ ست = دایمی پندر    ۷۔ دے = مہرمان  
 ۸۔ شری بھگوان کا ارشاد    ۹۔ سوال ادھائے

۱۰۔ سخن بھگوان پھریوں ہوئے۔ کہ سن آئے قوی دست پیالے کرے۔

कृष्ण गव थन्य दुदुच मालय शहल सेह  
मुहस लबस कुनो ब्रह्म जालवुन्य रेह ।

कृष्ण गव पोशवुन गंगायि हुन्द जल  
छलान हैदिस मुसलमानस बिलुक मल ।

कृष्ण गव फिकिरि तारुन बांसिहंद व्युच  
सु छा अक्यसुंद ? सु गव प्रथकांसि हंद व्युच ।

कृष्ण गव आत्मा सत आत्मा बस  
तमिस सोरुय छु हांसिल देययि गव यस ।

महासागर कृष्ण यिम दिल बनावान  
सिमय तस मंज गवनुक्य दुरदानु छारान ॥  
तलाशिय मर नु ज्ञानुक्य जीठ्य मेंजिला  
शऊरुक्य ला शऊरुक्य तिम बसावान ॥

महा सागर कृष्ण यिम दिल बनावान ।  
सिमय तस मंज गवनुक्य दुरदानु छारान ॥  
तलाशिय मर नु ज्ञानुक्य जीठ्य मेंजिला  
शऊरुक्य ला शऊरुक्य तिम बसावान ॥

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजी बोले,

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ।

गतेऽहं ग्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥१॥  
महर्षयः न प्रसवं न विदुः सुरगणाः प्रसवं न महर्षयः



نئے ہو کر

نور علی

لاہور

ہے! نے چھ گڑھان، شولہ ومان، نارہسے نار  
 رہتہ تینو مہن کرشنہ تہ کن  
 لارہسے لارہ

لاہور تہ پیچ زتر چھ کران کنوہ گنگس طوہ  
 آکاشہ پیٹھک سریر تہ نش  
 جاہسے جاہ

دل پانہ برہمان - کیاہ چھ دئی - کتھ چھ ومان بیر  
 یم چانہ نہج پکو تہ سپدو  
 یارہسے یارہ

نور علی لاہور  
 لاہور تہ پیچ زتر چھ کران کنوہ گنگس طوہ  
 آکاشہ پیٹھک سریر تہ نش  
 جاہسے جاہ

نور علی لاہور  
 لاہور تہ پیچ زتر چھ کران کنوہ گنگس طوہ  
 آکاشہ پیٹھک سریر تہ نش  
 جاہسے جاہ

نور علی لاہور  
 لاہور تہ پیچ زتر چھ کران کنوہ گنگس طوہ  
 آکاشہ پیٹھک سریر تہ نش  
 جاہسے جاہ



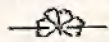


گوپالہ ! یترھا کہ آر پلس آب کر کہ آب  
 اکھ تہ تہ دوس ہو کر لگان  
 دار ہنسہ دار

۱  
 ۲  
 تم چانہ کلے چھو تہ چٹیکھ ویتھ تہ سپدی ویتھ  
 ۱ دریا  
 تم قلر من شری تار موٹا کہ  
 تار ہنسہ تار

دھن تار لولہ : کینہہ مگر من چھ گنجک نیاس  
 نیس تار تہ پتھ ، تس نہ کیچ  
 تار ہنسہ تار

۲  
 تار تھ تہ زیوانم ، کرشنہ لوبم من مہ سرفراز  
 ۲  
 اتھ پیریکہ پیچے پیچہ مہ گندم  
 تار ہنسہ تار



Handwritten text in the margins, likely commentary or additional verses, written in a smaller script. The text is arranged in vertical columns along the left and right edges of the page.







لچھ والنسہ گترھتھ کرشننہ ترما یکھ تہ مرماکھ دل  
 اتھ زرنیمہ پھر س تریمہ چھ لگان  
 پیارہ نسہ پیار

کمل اوہنہ وٹھ تہ گے پھر تہ مہ کن نین ! نین اچھ  
 یو دتیر نظر دکھ تہ دپے  
 مارہ نسہ مار

کرشنا ! مہ دیتھم سوزنتے نے مہ دلس زدی  
 چھس دومہن شہن پٹچھ وٹھ وٹھ  
 دارہ نسہ دارہ

دارہ دودار

موہ کی چھ ند - ہاتھی نے - شہ چھ امیک زو  
 رُح بالہ کرشن فاضلنیم  
 شادہ نسہ شادہ

۱۔ وہ کہتے ہیں بلبل مرے ذوق سے، وہ کہتے ہیں یو جیسا مری شوق سے

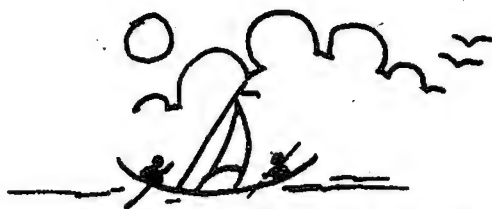
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

लक्ष्मी वीस गच्छिथ कृष्ण च मा यिख त् मुहकमन  
अथ जन्म फिरिस च्युह छु लगान  
प्यार हसा प्यार ।

कुमलाव हना वुठ त् गहे फिर त् मैकुन नैन  
योद तीरि नजर दिख त् दपय  
मार हसा मार ।

कृष्णा मे द्यु तथम सोज नतय नय म्य दिलस जे द्य  
छस दोन शहन प्यठ पथ वनुक  
होख दार हसा दार ।

मोरली छु निदा, हातफुन्य लय, शह छु अम्युक जुव  
रुह बाल कृष्ण, फाजिलन्य यिम  
शार हसा शार ।



तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।

तमः । तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।

## مورلی تہ مورلی درد

کُرتِ شہِ مورلی پیکرِ سوز و گداز  
دلِ گریبا، دلکش، مودرتے دِلنواز  
کے اچھ عرِفاں تہ شہِ قدسی صفا  
پانہِ مورلی در چھ سرتا پانچ سار

## میشرونے

میشرونے پیرانہ سمیچ بانسری زان  
بہانہ! گوشہ و چھن نے کس چھ وایان  
شریکِ سوز لافانی شہس تا  
شہک سا لک کُرتن آوار انسان



स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्त्य तं पुरुषोत्तमम् ।  
 न हि हे समावप्यन्ति विद्वद्भिरात्मनः ॥

## मोरलीदर

कृष्ण मोरली पैकरे सोजो गुदाज,  
 दिलरुबा, दिलकश, सोन्दर तय दिलनवाज ।  
 लय अमिच इरफान तु शह कुदसी सिफात  
 पान् मोरलीदर छु सर ता पा मजाज ॥

नोट :-

- १ पैकर—कालव, जिसम—मुज्जसम
- २ कुदसीसिफात—रूहानी गोण थवन बोल
- ३ मोरलीदर—मरली बोल, कृष्ण जी ।

## मैचिव नय

मैचिव नय प्रानि वक्तुच बाँसुरी जान  
 बहानय, गोछ बुछुन, नय कुस छु वायान  
 शरीरुक सोज लाफानी शहस ताम  
 शुहुक मालिक कृष्ण अवतार इन्सान ॥

नोट:-

- १ नय—मोरली

केशव । यन्मां वदसि सर्वमेतद्वत् ।  
 अस्तितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥१३॥

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिनारदस्तथा ।

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्त्य तं पुरुषोत्तमम् ।  
 न हि हे समावप्यन्ति विद्वद्भिरात्मनः ॥१५॥



کرشن بالسی ہتھ بڑتھ سیجر زن اتھ  
 یہ مُستی تہ فرہتھ چھ زن بوزونی چیتھ  
 یہ سنگیت چیتھ آئے کرشنا  
 یہ مودلی مودر مائے کرشنا  
 نر زگنس یہ نئے وائے  
 کرشنا کرشنا

کرشن بالسی ہتھ بڑتھ سیجر زن اتھ  
 یہ مُستی تہ فرہتھ چھ زن بوزونی چیتھ  
 یہ سنگیت چیتھ آئے کرشنا  
 یہ مودلی مودر مائے کرشنا  
 نر زگنس یہ نئے وائے  
 کرشنا کرشنا



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

تر شوقه سان رُمس رُمس اگر کُشن کر که  
 تر که تر مر نه بر و نه توے نسّه تر نه مر که  
 چه تر نه پھر لگاں تمن مشد کر شاں بین  
 تر که تر بوسرس اگر کُشن کر که

चशोक सान रुस रुस अगर कृष्ण गरख  
 मरख च मरन बोहे-तवय नसो चुजाह मरख  
 छिजनम् फिर्य लगान तिमन यशिद गहान यियन  
 तरख च बससरस अगर कृष्ण कृष्ण करख

कृष्ण बान्सुरी ह्यथ बरिथ सेहर ज़न अथ  
 यि मस्ती तु फरहथ छि ज़न बोजवुन्य चथ

यि संगीत चथ आय कृष्णा !  
 यि मोरली मोदर माय कृष्णा !

च जगतस यि नय वाय , कृष्णा कृष्णा !

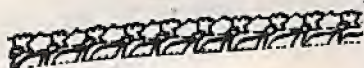
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।

विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन ।  
 कथं विद्यामहं योगिस्त्वं सदा परिचिन्तयन् ।  
 योमिंमृतिमिलोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि

विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन ।  
 कथं विद्यामहं योगिस्त्वं सदा परिचिन्तयन् ।  
 योमिंमृतिमिलोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि



یہ لے زن منس نہ دزان زن زندن دار  
کران رُح چھ بیدار یہ یس لوگ سہ مشیار  
تَمَس کینہ نہ پھوے کرشنا!  
یہ موہلی کرشمہ کرے کرشنا!  
منس کینہ نہ پھوے  
کرشنا کرشنا



یہ لے بوزنگ ہنس دوان الیشور یس  
سہ یوگس اندر مس کران ششہاس  
تَمَس نش پڈر دے کرشنا!  
یہ موہلی چھ بڈشے کرشنا!  
ہلچ وٹھ چھ سیکر ترے  
کرشنا کرشنا



मरीचिर्मरुतामसि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥

। अहमादिश्च सर्वभूतानामन्त एव च ॥२०॥

यि लय ज़न मनस नार दज़ान ज़न चंदन दार  
करान दिल छु बेदार यि यस लोग सु हुशियार

तमिस कहै नु परवाय कृष्णा !  
यि मोरली प्रेशम क्राय कृष्णा !

मनस कहै नु परवाय, कृष्णा कृष्णा !

अहमादिश्च सर्वभूतानामन्त एव च ॥२०॥

यि लय बोज़नुक ह्यस दिवान ईश्वर यस

सु यूगस अन्दर मस करान शशजहातस  
तमिस निश रुचर द्राय कृष्णा !

यि मोरली छै <sup>बड</sup> शाय कृष्णा !  
ह्यसच वथ छै <sup>स्य</sup> ज़ त्राय, कृष्णा-कृष्णा !

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूतेशयस्थितः ।

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।

प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥

یہ لے پھر گوشن تہ لُج لام پوشن  
 چھ بلبُل تہ گوشن حقیقت چھ گوشن  
 یہ مہر لی چھ بے رُکشا کرشنا  
 یہ مہر لی چھ بکتاے کرشنا  
 یہ بے رنگ بے رُکھاے  
 کرشنا کرشنا

دھرم، کُربے تہ انسان سبٹھاؤ تہ سبٹھاہ جان  
 یہ ساری چھ مانان چھ منزل سہ بھگوان  
 چھ گپتا تہ ہمارے کرشنا  
 یہ مہر لی اثر بے پوزاے کرشنا  
 ستمے سور ہمارے  
 کرشنا کرشنا



यि लय कीर गोशन तु लज लाम पोशन  
छि बुलबुल ति तीशन हकीकत छे रोशन  
यि मोरली छे बे छाय कृष्णा !  
यि मोरलो छे यकताय कृष्णा !  
यि बे रंग बे छाय कृष्णा !

नोट : १ गोशन-तरफातन २ यकताय - समुन  
करन वाजन ३ बेरंग—बे इमतियाज



धर्म, कय त इन्सान स्यठा रूत्य, स्यठा जान  
यि सोरी छि मानान छु मंजिल सु भगवान  
छे गीता ति हमराय कृष्णा !  
यि मोरलीं बे पोज आय कृष्णा !  
समय सोर हमराय कृष्णा कृष्णा !

نئے لے چھ یکسان کئی ہندو مسلمان  
 چھ رحمان بھگوان چھ بھگوان رحمان  
 دُئی ہنر نہ کہہ رے کرشنا!  
 یہ موہ لی چھ بے نیاے کرشنا!  
 چھ یکسان بے نیاے  
 کرشنا کرشنا

حفاظت پشن ہنر چھ وٹھ مُرسلن ہنر  
 گے موسمن ہنر گے عیسمن ہنر  
 گپا لاثر یہ تھنر بے کرشنا!  
 یہ موہ لی دلچ جائے کرشنا!  
 تریہ نشیم سمتھ آئے  
 کرشنا کرشنا

॥ : नृपि कृष्णः । नृपि कृष्णः । नृपि कृष्णः ॥

नये लय छे यकसान कुनो हेन्च मुसलमान  
छु रहमान भगवान, छु भगवान रहमान ।  
दुई हंजु नु कांह राय कृष्णा !  
यि मुरलो छे बे न्याय कृष्णा !  
छु यकसान बे न्याय कृष्णा कृष्णा !

नोट:- १ दुई - बैर २ बेन्याय - न्याय रोम



हिफा जत पशन हंजु छे वय मोरसलन हंजु  
गहे मूसहन हंजु गहे ईसहन हंजु  
गुपाला जे थज जाय कृष्णा !  
जे निश समिथ यिम आय, कृष्णा कृष्णा !

नोट :- पुश — हयवान, २ मारसल — दरजम मंज  
प'गमवरस खसिथ

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्येकमक्षरम् ।

देवर्षीणां च नारदः ।  
अश्वत्थः सर्वदृक्षाणां  
हिमालयः ॥  
यज्ञानां जपयज्ञोऽसि  
स्थायराणां

उन्वैः श्रवसमक्षानां विद्धि मामसुतोद्भवम् ।  
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥



ترچھا تھن ترچھا تھن ترچھا ماچھا پو تھن  
 یہ تھن سو رہا کو ازی نقش اتھ چھ بنی بنی  
 چھ کیو پڈ تہ سرے کرشنا  
 یہ مہرلی چھ سرے کرشنا  
 حین تر دہرے  
 کرشنا کرشنا

کرشن جی اثرہ چھ جے کُن شہ، کُن پے  
 کُن نئے، کُن نئے بیتھی وہ پترہ دے  
 پے گون ترہ نش درے کرشنا  
 یہ مہرلی اثرہ نش زے کرشنا  
 ترہ جے جے اثرہ لوگ آے  
 کرشنا کرشنا





گلن ہند ترنم، شہرین ہند تکلم  
 چھ موہلی موہر میوٹھ گفٹار گفٹار  
 وزن شبنم، جلتہ نگ تار کن ہند  
 یہ موہلی سراپا چھ سینا سینا  
 دلچ پوشوئی لے میچ زندہ سوانہ  
 پین منتر چھ پوشیدہ اسرار اسرار

میں رسول میں مولیٰ واسد اسے شیر قبیلے میں پاندو کے ارچن امیر



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥



गुलन हुंद तरनुम थरघन हुंद तक्कलुम,  
छे मुरली मुदुर म्यूठ गुफतार गुफतार।

वजुन शबनमुक, जलतरंग तारुकन हुंद,  
यि मुरली सरापा छे सेतार सेतार ।

दिलुच पोशु वन्य लय मनुच जिन्दु आवाज  
यिमन मंजु छि पूशीदु असरार असरार ।

ग्यव, दुद, तु गुरुस क्याजि चि अंदेश करिथ चोय,  
भगवान् । यहुद बागि बेहत शेहजार लुकन वोत।  
जुव मंगतु, जिगर मंगतु, चू रुह मंगतु दिलो जान,  
मोसुम् । लगय क्याजि असो जूरि मक्खन रुपोय॥

शुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥ दण्डो दमयतामसि नीतिरसि जिगीषताम् ।

पुष्पीनां वासुदेवोऽसि पाण्डवानां धनंजयः ।



بالہ کِشنِ یاکِ دِخِتم آگہی  
 پادِ گوہرِ دسِ مہِ ذوقِ بندگی  
 بانسری ہُندِ شہِ چھ پیرِ مہکِ اتما  
 بانسری ہنرِے چھ سازِ دِبری  
 بوڑوئی دُوپِ نے خودی ہُندِ روپِ بنگ  
 اٹھ خودی پٹھِ چھ فداِ لچھ بے خودی  
 وچھ امی موملی حقیقتِ واشِ کوڈ  
 کوڈ امی ظاہرِ زہِ آوارِ گوئی  
 نیکِ بی منزِ کردِ وِپانِ سوِرخِ دِسفید  
 فاضلا! مومِ دلی پننِ رنگِ قودِتی

॥१४॥ नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप ।

## बाँसुरी

बालकृष्णन याम दिचनम आगंही

पाद' गव हृदयस' मय जोके' बंदगी ।

बाँसुरी हुंद शह छु प्रेमुक आत्मा

बाँसुरी हुंज लय छै साजे दिलबरो ।

बोजुवुन्य दो'प नय "खोदी" हुंद रूप रंग

अथ खोदी प्यठ छय फिदा लछ "बेखोदी"

बुछ अमी मोरली हकीकच वाश कोड

कोर अमी जाहिर जि अवतार गव नबी,

यकदिली' मंज कर व्यपान सुरखो सफेद

"फाजिला" मोरली पनुन रंग कुदरती

नोट : 1. जाग्रती, ह्यस 2. दिलस, 3. शोक

4. विशर

वा ।

श्रीमद्विजितमेव

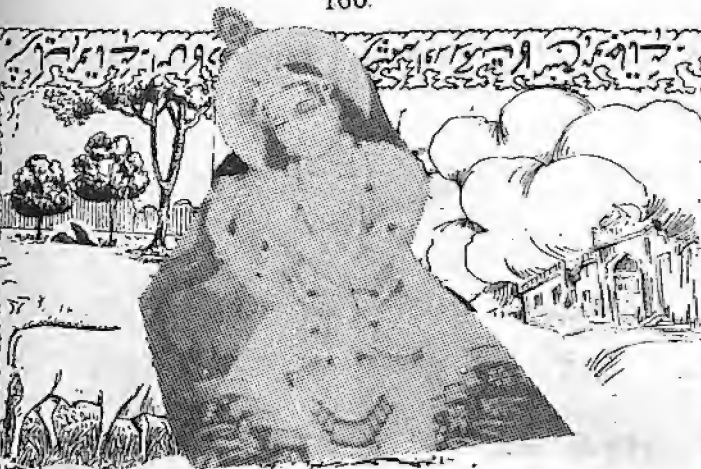
यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं

॥१४॥

एष तुद्देशतः प्राक्तो विभूतेर्विस्तरो मया ॥१४॥

नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप ।





بے خبر یا بھو کرشنہ لالہ گورنس  
 مرتب منتر ہیر ہیر ہیر کھورنس  
 اتھ اندر میانین اتھن منراوس کیاہ  
 واو ہالین منتر بہ سودر تورنس

شعورس لا شعورس منتر کرشن اسم  
 وچھم ندن سیرہ، لیکن رنگ سیا فام  
 سہ یا متھ درشنک بر و تھو چھ تر وان  
 وچھان تس گوپین ستویشور تام

کیا فی کونج عرفان باہمی حاصل ہو جاتا ہے تو اس کے لئے ہر طرف ایسا ہی پرانا مانا

एवमेवधारय त्वमात्मानं परमेश्वर ।

॥ १॥



वेखबर पा'ठ्य कृष्ण लालन गोरनस,  
मरतवस मंज हेरि ह्यो'र 'हयो'र खोरनस ।  
अथ अन्दर म्यान्थन अथन मंज घोस क्याह,  
वावु हात्यन मंज ब' सो'दरस तोरनस ।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

शऊरस लाशऊरस मंज कृष्ण ग्राम,  
वृछुम जन सिरियि लेकिन रंगु सियाह काम ।  
सु यामथ दर्शनक्य वर बंध्य छु त्रावान,  
वृछान तस गुपियन सत्य ईश्वर ताम ।

अर्जुन उवाच ॥

मदनप्रहाय परमं गुणमध्यात्मसंज्ञितम् ।

यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥ १॥



سن ہے نے کیا

دلن گو دین و دھرمک سہرو کم  
چھ اوگون پھانپھلاوان ابن آدم  
پہیکھ اوتار سنت یوگ پھیر واپس  
اے کنی پیارنچ کل آشر ہتر چھم

۱۔ اوگون = بدصفت ۲۔ ابن آدم = انسان ۳۔ اوتار یون = پتہ زون



॥६४॥ : ॥६४॥ ॥६४॥ ॥६४॥ ॥६४॥ ॥६४॥ ॥६४॥ ॥६४॥ ॥६४॥

صبح و تہ رُخ ! اگرشن چھے سیتو پانس  
 سه میلته سینر ریکس ذرئس ذراتس  
 جہانس سورستہ یام تار کیخ  
 نجاتچ رز کر تہ لاگس کینارس

सही वथ रठ ! कृष्ण छुय सूत्य पानस  
 सुमीलित पजर्रकिस जरस जुरातस ।  
 जहांनस सोरि सथ याम तार लवनुच,  
 नजातचि रज करिथ लायस किनारस ।

संजय उवाच

दिलन गव दीनु धर्मुक आबिरु कम,  
 छु अवगोन फाफुलावान इल्लि आदम ।  
 च्छु ह्यख अवतार सतयोग फेरि वापस,  
 अवय किन्य प्रारुनुच कल आशिहच्छम ॥

अवगोण—वदसिफत, :— काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार  
 याने शहवथ, चख. मालय, तमाह त गुरुर

धार्तराष्ट्राणं हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥४६॥ रथोपस्थ उपाविशत् ।

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः



یا تمھ پر آدم دین و دھرمک پیرا یہ سمسار  
 گیتا چھ شاید کر شتر گوپال سپد نمودار  
 تس سپد بے دین ادھر من تے بچھن ستر جنگ  
 میٹر خاک سپدن چھیکر س ظالم تہ خطا کار

गान्धीय संसारे इति वाच्यं पारितोषिकं

# गीता

کرشن جی ار جنس اسرار باوان  
 تهن ہند اینہ گیتا گاشراوان  
 سلوک نابد تہ الہامی شبد قد  
 پر ن والیس چھ امریت دامہ چاوان

कृष्ण जी अर्जुनस असरार बावान,  
 तिमन हंदु आनु गीता गाशरावान ।  
 श्लोक नाबद त् इलहामी शब्द कंद,  
 परनवालिस छि अमृत दाम् चावान ॥



यामत यि आदम धर्मबुद्धीनुक प्राटि यि संसार,  
 गीता छि शाहिद, कृष्ण गुपाल सपदि नमूदार,  
 तस सपदि बे दीनन, अधर्मन तय यछन सूत्य जंग,  
 मेच खाक सपदन छेकरस बेदीन त् सताकार ।

॥२९॥ मे रोमहर्षश्च जायते ॥२९॥  
 वेपथुश्च शरीरे । वेपथुश्च शरीरे ।  
 सप्त गात्राणि मुखं च परिचुष्यति ।  
 सीदन्ति सप्त गात्राणि मुखं च परिचुष्यति ।

दृष्टेर्मं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥२८॥

न च शक्रोभ्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥





یام دھرتی پیٹھ سید سندی باندہ عام  
 نہ کہ سندی پاٹھو ٹنڈی نہ کو کور و تمسام  
 سنت نمودار گو است کو فود گو  
 کور سری کرشنن صبحی سمیک نظام

ہماری ادھر فریج ہے بے شمار، کہاں دار جھیشتم شایع عالمی وقار



याम दरती प्यठ सपुद मुदियानु ग्राम,  
 चक्रि हिद्वा पाठय नचनि लग्य कोरव तभाम।  
 सत नमूदार गव असथ काफूर गव,  
 कोर श्रीकृष्णन संहो समयुक निजाम ॥



چھ بھگون ناسہ تر اسن پنج گالان - دغا بازن چھ موتک پیالہ چاوان  
 گٹن منہ پچا الوان جیون اڈھ من  
 سہ دین دار: حق پرستن تار تاران

ह्युभगवान नासुत्रासन बेख जलान ।  
 दगाबाजन ह्यु मोतुक प्यालु चावान ॥  
 घटन मन्त्र फाटवान जीवन अध्रमन ।  
 सुदीन्दार: हक परस्तन तारु तारान ॥





شتم گارو ستم کور پاؤی پانس  
 مہا بھارت پھرن رو دیہر تھنہ  
 تلو نیلج علم یوہ روز قاسم  
 سبق دیت کر شہ او تارن جہان

सितम गारव सितम कौर पाव्य पनस ।  
 महाभारत फिरन रूद प्रथ जमानस ॥  
 तुलिव पजरुच्य अलम, पोज रोजि कोइम  
 सबख द्युत कृष्ण अवतारन जहानस ॥

راجہ دیو دھن کا قصہ

# کرشن کہانی

اگر سین اور دیوگ دو بھائی تھے۔ اگر سین متھرا کے راجہ تھے۔ دیوکی  
ایک کنیا تھی۔ اُس کا بھائی کنس تھا۔ کنس بہن کے ناٹے دیوکی کو بے حد پیار  
کرتا تھا۔ دیوکی بالغ ہوئی دیکھ کر بہمہ صفت موصوف شوری سین کے بیٹے  
واسد دیو کے ساتھ بیاہی گئی۔ کنس کو دیوکی کی شادی سے بے حد خوشی  
ہوئی۔ اُس نے دیوکی کو چہنیز میں کافی دھن دیا۔ اور بے حد خوشی کے ساتھ  
بہن کو الوداع کر رہا تھا کہ آسمان سے آواز آئی کہ ہے راجہ کنس! جس  
بہن کو تو اتنا پیار کرتا ہے اُس کا آٹھوں بیٹا تنہا قاتل ہو گا۔ جب  
کنس نے ایسا سنا تو حیران رہ گیا کہ یہ میں نے کیا سنا۔ اچانک بھڑ  
یہی آواز آئی۔ کنس کو بہت غصہ آیا اور قصد کیا کہ دیوکی کے بطن  
میں ہی اس کے آٹھویں بیٹے کو مار دیا جائے وہ اس طرح کہ جنم لینے سے  
پہلے ہی اُس کی ماں دیوکی کو موت کے آٹاروں اس کا بیٹا اُس کے بطن میں  
جائے۔ وقت آنے پر کنس دیوکی کے بال پکڑ کر اُس کو مارنے کے لئے تلوار

دھرت راستہ نے کہا:-

## ❀ कृष्ण कहानी ❀

लेखक

**मानस-किंकर कौशलकिशोर दास**

उप्रसेन और देवक दो माईं थे। उप्रसेन मथुरा के राजा थे। उनका पुत्र कंस था। देवकी देवक की कन्या थी। छोटी बहिन होने के नाते कंस देवकी को अत्यन्त स्नेह करता था। देवकी को विवाह योग्य हुई देखकर सर्व-गुण सम्पन्न शूरसेन के पुत्र वसुदेव के साथ देवकी का विवाह स्थापित कर दिया। कंस को देवकी के विवाह की अत्यन्त खुशी थी उसने देवकी को दहेज में बहुत धन दिया और अधिक स्नेह होने के कारण कंस देवकी को स्वयं रथ में बैठा कर विदा करने गया। जिस समय कंस देवकी को विदा कर रहा था उसी समय आकाशवाणी हुई कि हे ! राजा कंस जिस बहिन को तू इतना स्नेह करता है उसी का आठवाँ पुत्र तेरा काल होगा। जब कंस ने इस प्रकार सुना तो वह आश्चर्य में पड़ गया कि यह क्या कहा। तो फिर वही आकाशवाणी पुनः हुई सुनकर कंस को बड़ा क्रोध आया तब कंस ने सोचा कि इसके गर्भ से ही वह आठवाँ पुत्र जन्म लेगा, अतः इसी को मार दूँ जब ये ही नहीं रहेगी तो फिर पुत्र कहीं से होगा। ऐसा सोच कर

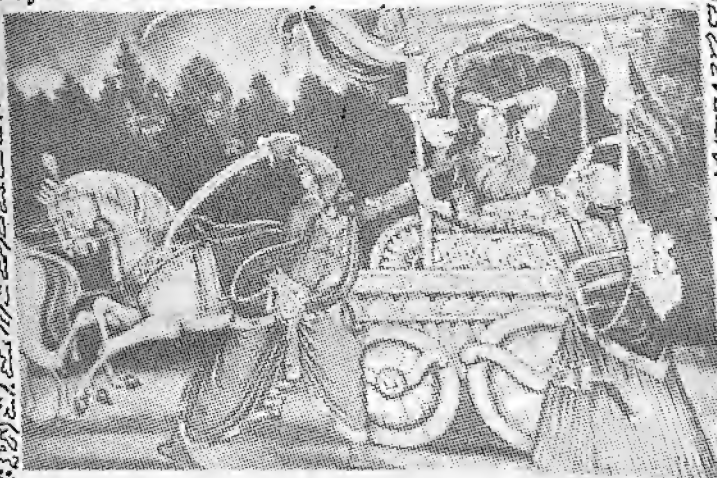
{ धृतराष्ट्र उवाच }

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।

सजय उवाच

॥१॥ संजय ॥ किमुच्यते पाण्डवाश्चैव मामकाः ॥१॥





کرشن مہاراج کی ماما جی کو  
بھائی کش قتل کرنے لگا۔

تاکہ اُس کا بیٹا اُس کے بطن میں ہی مر جائے۔ وقت آنے پر کش نے  
دلوکی کے بال پکڑ کر اُس کو مارنے کے لئے تلوار میاں سے نکالی۔  
جیسے ہی وہ اُسے مارنے لگا تو کش نے اس کا ماتھ پکڑا اور پر اٹھنا  
کی کہ دلوکی عورت ہے۔ صنف نازک ہے اور آپ کی بہن ہے اور  
شادی شدہ ہے۔ اس لئے آپ اس کو نہ ماریں۔ اس کے جو بیٹے  
ہوں گے ہم انہیں آپ کے حوالے کریں گے۔



कंस बड़ा पापी था । उसकी

दुष्टताकी सीमा नहीं थी । वह भोजवंशका कलङ्क ही था । आकाशवाणी सुनते ही उसने तलवार खींच ली और अपनी बहिनकी चोटी पकड़कर वह उसे मारनेके लिये तैयार हो गया ।

अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।

वीर्यवान् ।

काशिराजश्च

विराटश्च दुपदश्च महारथः ॥४॥

युधानो

کرشن جی نے جنم لیا۔ بھگوان نے اُن سے مندرجی کے گھر کو کل پنہا کے لئے کہا۔ وہاں  
 اُن کے گھر ایک لڑکی پیدا ہوئی تھی جیسے یہاں لانے کے لئے کہا گیا۔ واسد یو کے ہاتھوں  
 سے پھلکڑیاں کھل گئیں اور دروازوں کے تالے بھی کھل گئے اور سب پر دروازوں  
 پر گہری نیند غالب آگئی۔ واسد یو نے کرشن کو ایک چھاج میں رکھ کر وہاں سے نکالا۔



لڑائی کو نکلے میں اہل خدا ناک جو رجب المرجب میں وقت خناب۔



को नींद आ गई। प्रभु देवकी के सामने चतुर्भुजी रूप में प्रकट हुये। तब देवकी ने उनसे शिशु के रूप में बनने की प्रार्थना की और प्रभु छोटे बालक बन गए। भगवान ने उनसे कहा कि हमें गोकुल में नन्दजी के यहाँ पहुँचा दो और वहाँ उनके यहाँ कन्या उत्पन्न हुई है उसको यहाँ ले आओ। वसुदेव जी के हाथों में पड़ी बेड़ियाँ खुल गईं। समस्त द्वारों में पड़े ताले स्वयं खुल गए सब पहरेदार गहरी नींद में सो गये। जब श्रीकृष्ण को लेकर वसुदेव चले तो उस समय वर्षा बहुत जोरों से हो रही थी। इसलिये शेषनाग ने अपने फन- फँसकर भगवान के ऊपर छत्रछाया कर दी। उस समय यमुना का जल ऊपर तक बढ़ आया



واسد یو جی نے کرشن جی ہاراج کو دشمنوں کے چنگل سے پورے احتیاط  
 کے ساتھ نکالا اور سلامتی کے ساتھ جمنا جی کے کنارے پہنچ گیا۔  
 اسی دوران میں موسلا دھار بارش ہو رہی تھی اور جمنا میں کافی  
 پانی چڑھ گیا تھا اور ذریا کو عبور کرنا ناممکن تھا۔ اتفاق سے  
 عین موقع پر شیش ناگ نمودار ہوا اور اپنا پھن پھیلا کر بھگوان  
 کے اوپر چھتر سایہ کر دیا۔ بھگوان نے جمنا کے بہاؤ کا مزاج بھانپ  
 لیا اور آہستہ آہستہ چھاج سے اپنا پیر باہر نکالا اور اس طرح جمنا  
 کو اپنے پیر کو بوسہ دینے کا موقع فراہم کیا۔ جمنا جی نے اُن کے پیر  
 چوم لئے اور پرسن ہو گئے۔ تو فوراً واسد یو جی کو پار جانے دیا۔  
 واسد یو جی بھگوان کرشن کو لے کر گوکل پہنچ گئے۔ وہاں اُس  
 وقت نند جی کے گھر میں سب سو رہے تھے۔ واسد یو جی نے کافی  
 رازداری کے ساتھ کرشن جی کو مانا جسودا جی کے پاس لہا دیا اور  
 کنیا کو اٹھا لیا اور متھر اسم کر دیو کی جی کو دے دی جیل خانے میں پہلے  
 ہی کی طرح تالے پڑ گئے۔ لڑکی کا رونا سن کر تمام ابہرے دار جاگ اٹھے۔ خبر  
 پاتے ہی کنس وہاں آیا۔ مگر بچے کو دیکھ کر معلوم ہوا کہ یہ لڑکی ہے۔

مہاراج گرو صاحب احترام، جہاں کے دو جہنموں میں عالی مقام۔

अथ श्रीकृष्णस्य गोपनीयस्य च ॥



तब भगवान ने उनका भाव समझकर सूय से अपना  
 पैर निकाल कर स्पर्श कराया। यमुना जी चरण स्पर्श  
 कर प्रसन्न हो गई और उन्हें भाग्य दे दिया। वसुदेव  
 जब गोकुल पहुँचे तो वहाँ नन्द जी के घर सब सो रहे  
 थे। भवसर पाकर वसुदेव जी ने माता यशोदा जी के  
 पास कृष्ण जी को लिटा दिया। कन्या को उठा  
 लिया और मथुरा जाकर देवकी को दे दिया। कारागार  
 में पहले की भाँति ताले पड़ गये। कन्या का रुदन  
 सुनकर सब पहरेदार जाग गये। सबर पाते ही कंस  
 वहाँ आया, कन्या को देखकर उसने सोचा ये तो कन्या

नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्त्रवीमि ते ॥ ७ ॥ भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिजयः ।

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम



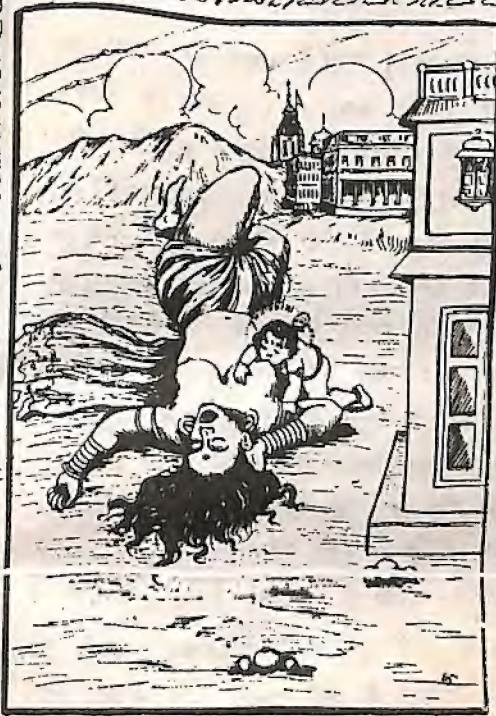
مگر کہا گیا تھا کہ یہ لڑکا ہوگا، لیکن تب ہی دیوتاؤں کی مایا کا وچار  
 آتے ہی جو نہی کنیا کو زمین پر پٹکنے کے لئے اٹھایا وہ ہاتھوں میں سے  
 نکل کر فضا میں اڑ گئی اور بولی، ارے راجہ کنس! تو مجھے کیسے مارتا  
 تجھے مارنے والا تو گوگل میں پیدا ہو چکا ہے۔ کنس نے دربار میں آکر  
 منتریوں کو یہ خبر سنائی، تو سب نے کہا کہ یہ تو ہمارے باپ کا ہاتھ کا  
 کھیل ہے۔ ہم اس بالک کا پتہ لگا کر اس کا کام تمام کریں گے۔ تب کنس نے  
 بہت سے راکششوں کو کرشن کے مارنے کے لئے گوگل بھیجا، لیکن وہ خود  
 موت کا شکار ہو گئے جو بھی جاتا تھا اس کو واپس نہ آتے دیکھ کر کنس  
 نے پوتنا کو بلایا۔ اس نے کہا کہ گوگل میں جتنے بھی بچے ہیں، میں ان سب کو  
 کھا جاؤں گی۔ یہ سن کر کنس بہت خوش ہوا۔ پوتنا اپنے پستانوں میں  
 زہر بھر کر گوگل میں آئی اور وہاں سب بچوں کو کھا کر تند بھون میں آگئی  
 اور ایک بہت سُندر گوپي کا روپ بنا کر جسودا سے کہا کہ میں لالہ کی  
 مبارکباد دینے آئی ہوں اور کرشن جی کو اپنی گود میں لے لیا جسودا جا  
 گھر میں دوسرے کاموں میں لگ گئی۔ پوتنا نے زہر بھرے پستان کو  
 بھگو ان کے مُنہ میں ڈالا۔ تب پر بھونے دودھ کے ساتھ اس کے

॥१४४॥ श्री कृष्ण भक्तः श्रीमद्भक्तः श्रीमद्भक्तः श्रीमद्भक्तः

है पुत्र बताया था किन्तु तभी देवताओं की माया का विचार आते ही ज्योंही कन्या को पृथ्वी पर पटकने के लिए उठाया वह हाथ में से आकाश में उड़ गई और बोली घरे ! राजा कंस तू मुझे काहे मारता है तेरे मारने वाला तो गोकुल में पैदा हो चुका है । कंस ने दरबार में आकर मन्त्रियों को यह समाचार सुनाया तो सब ने कहा यह तो हमारे बाएँ हाथ का खेल है हम उस बालक का पता लगा कर अभी काम तमाम कर देते हैं । तब कंस ने बहुत से निशाचरों को कृष्ण के मारने के लिए गोकुल भेजा, लेकिन वे स्वयं ही काल का आस बन गए । जा भी जाता उसको वापिस न आते देख कंस ने पूतना को बुलाया । उसने कहा ! गोकुल में जितने बच्चे हैं मैं सब को खाजाऊँगी । इससे कंस बहुत प्रसन्न हुआ । पूतना अपने स्तनों में विष लगा कर गोकुल में आई । वहाँ सब बच्चों को खाती जब नन्द भवन में आई तो बहुत सुन्दर गोपी का रूप बना लिया और यशोदा से कहा मैं लाला की बघाई लेकर आई हूँ तथा कृष्ण जी को अपनी गोद में ले लिया । यशोदा जी गृह में अन्य कार्य में लग गई पूतना ने विष लिये स्तनों को भगवान के मुँह में डाला तब प्रभु ने दूध के साथ उसके प्राणों को भी पी

यथाभागमवस्थितः  
सर्वेषु  
अन्येषु  
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीष्माभिरक्षितम् ॥१०॥

अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम्



پرانوں کو بھی پی لیا  
اس طرح شکستہ  
بکاسر اور نرکاسر  
وغیرہ بے شمار  
راکشوں کا  
خاتمہ کر دیا۔  
بھگوان کرشن  
پیلہ ہی کنس  
کو بھی مار سکتے  
تھے، لیکن ان

راکشوں کو بھی

مارنا تھا، اس لیے کہ کنس انہیں ویاں بھیجتا تھا اور پر جھو جی انہیں آسانی  
اور کھیل کھیل میں مارتے تھے۔

بھگوان کرشن کی ما کھن لیلیا میں بھی سیاست کار فرما تھی،  
کیونکہ برج کے علاقہ سے سب ما کھن غارتیاً بھیجا جاتا تھا۔ بھگوان نے  
جنگ کی سولہ



॥ शिवः पादवधूतं दिव्यं श्रीं प्रकथयति ॥



लिया। इस प्रकार वाकटामुर, बकामुर, नरकामुर इत्यादि अनेक राक्षसों का संहार किया। भगवान कंस को भी पहले ही मार सकते थे लेकिन इन राक्षसों को भी मारना था अतः कंस उन्हें वही भेजता और प्रभु खेल २ में उन्हें मार देते थे। भगवान की माखन लीला में राज-नीति थी क्योंकि ब्रज से सब माखन श्रृण रूप में कंस को भेजा जाता था। भगवान ने

सहस्रैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥ श्वेतैर्हयैर्गुक्तैः महति स्रन्दने स्थितौ

**सतः श्लाघ्य**

**प्रेम**

\*\*\*\*\*

سوچا کہ اس سے دشمن کو قوت ملتی۔ یہ وہاں نہیں جانا چاہئے۔ نیز گویوں کا  
اُن پر بہت ہی پیار تھا۔ جس دن کرشن جی اُن کے گھر نہیں جاتے تھے وہ  
رورو کر انہیں پکارتی تھیں اور ماکھن کھلاتی تھیں۔ بھگوان ہر ایک  
کام معجزے کے طور پر انجام دیتے تھے۔ ایک بار گھر میں ماکھن کی ٹکلی توڑ  
دی۔ جسودا جی نے اُسے ایک اوکھلی سے باندھ دیا۔ بھگوان نے اوکھلی کو  
ٹیرٹھا کر دیا۔ پیل آرجن کا ادھار (غلامی) کیا۔

جب کنس کو بہت دن ہو گئے تب نارو جی نے اسے کہا کہ آپ بھگوان کرشن  
اور اُن کے بیڑے بھائی کو دھنشن بلیکے کے بہانے بلاؤ اور تین کروڑ کنول کے  
پھول لانے کو کہو۔ کنس نے اکرور کو ان دونوں بالکوں کو لینے کے لئے بھیجا  
اور حکم دیا کہ اگر اتنے پھول نہ بھجوائے تو سارے گوکل کو جمن میں بٹھائیے  
اکرور جی نے سب ماجہ مندرج کو سنا یا۔ ماما جسودا نے کرشن سے کہا کہ  
آج دُور کھیلے مت جانا، لیکن پر بھونے سب دوستوں کو ساتھ لیکر  
جمن کنارے گیند کا کھیل شروع کیا۔ جب بھگوان کے پاس گیند آئی  
تو انہوں نے اسے جمن میں پھینک دیا اور پھر خود بھی اُس میں کود پڑے۔  
وہاں کا لیا ناگ کو قابو میں لا کر اُس کے پھن پر مٹا چنے لگے اور اسی پر







تین کروڑ کنول کے پھول

منگالے۔ اگر ورجی جب

بلرام اور کرشن کو لے جانے

گئے تو تمام برج اُن کی جدائی

میں رو رہا تھا۔ تب بھگوان

نے اُن کو سمجھایا کہ ہم جلدی

لوٹ سہیں گے۔

متھرا پہنچ کر گویا پڑنا می ماضی کو نجات دلائی۔ کشتی کھیلنے کے دور  
 بے شمار پہلوانوں کو پھپھڑا۔ اپنی ماتا دیوی کی جگہ کا بدلہ لینے کے لئے کنس کو  
 بالوں سے کھینچ کر، پکڑ کر اور مار کر اُسے مُمکنی بخشی۔ واسد پو اور  
 دیو کی کو قید سے رہائی دی۔ کنس کے والد اگر سین کو قید سے نکال کر  
 تخت شاہی پر بٹھایا۔ جبرائیل اپنے داماد کا بدلہ لینے کے لئے  
 سترہ بار فوج لے کر آیا۔ بھگوان نے اُن تمام کا خاتمہ کیا، پھر جب  
 اٹھ سو تیس بار اُس نے حملہ کیا تو بھگوان دُور کا چلے گئے اور رات بھر  
 تمام لوگوں کو دُور کا پہنچا دیا اور خود ایک پہاڑی کے پیچھے سے نکل کر

नमश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥ अथ व्यवसितान्दष्टा धातराष्ट्रान्कपिष्वजः ।

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ।



کو دپٹے۔ جبرائیل نے خیال کیا کہ اتنی اونچائی سے کود کر بچے نہیں  
ہونگے تاہم پہاڑوں کے ارد گرد آگ لگوا دی۔ پھر خوش دلی سے لڑوٹا  
کرنے لگے۔

ادھر جھوماسر نے راجاؤں کی سولہ ہزار کنیاؤں کو اغوا کر کے انہیں  
حرست میں رکھا ہوا تھا۔ انہوں نے بھگوان سے التجا کی، اس پر بھگوان  
نے جھوماسر کو قتل کر کے مملکتی دلائی۔ پھر ان کے پہاڑ تھننا کرنے پر پتی روپ  
میں تسلیم کیا۔

کورؤ پاندوؤں کی سپہ میں دشمنی تھی۔ پاندو بھگوان کرشن کے  
معتقد تھے۔ کوروؤں نے جمے کی چال چل کر پاندوؤں کو ہرا دیا اور  
سب کچھ داؤ پر لگوا دیا۔ بھری سبھا میں دروپدی کو ننگا کرنا چاہا۔  
لیکن بھگوان نے ساڑھی کو اتنا دراز کیا کہ خود دشمن کھینچتے کھینچتے  
مار گیا۔ ان کو جنگل بھیج دیا گیا۔ کبھی لاکھ کے محل میں آگ لگوائی، کبھی  
زہر دیا۔ لیکن ہر کھوسب طرح سے ان کی حفاظت کرتے رہے۔ مہابھارت  
کے جنگ میں ارہن کے رتھبان بنے۔ جنگ میں جب ارہن کو موہ سیا  
تو اسے گیتا کا اُپدیش دیا۔ جبرائیل کو بھیم کے ہاتھوں مروا دیا۔ آخر



एवमुक्त्वा ह्याकेशो गुडाकेशेन भारत ।  
 सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥२१॥  
 यावदेताभिरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान् ।

ऊँचे से बचे नहीं होंगे और फिर पहाड़ी के चारों  
 ओर आग लगवा दी, फिर प्रसन्न मन से रहने लगा ।  
 उधर भीमासुर ने राजाओं की सोलह हजार कन्याओं  
 का अपहरण करके उन्हें बन्दी बनाया हुआ था उन्होंने  
 भगवान से प्रार्थना की तब प्रभु ने भीमासुर का  
 वध करके उन्हें मुक्त किया । फिर उनके प्रार्थना करने  
 पर उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया । कौरव  
 और पांडवों की आपस में शत्रुता थी । पांडव भगवान  
 कृष्ण के भक्त थे । कौरवों ने जुए का प्रपंच रचकर  
 इनको हरा दिया । तथा सब कुछ दाँव पर लगवा  
 दिया । मरी समा में द्रोपदी को नग्न करना चाहा  
 लेकिन भगवान ने साड़ी को इतना बड़ाया कि स्वयं  
 दुःशासन खींचते-२ हार गया । वन में भेज दिया,  
 कभी लाक्षागृह में आग लगवाई, विष दिया । किन्तु प्रभु  
 सब तरह से उनकी रक्षा करते रहे । महामारत के  
 युद्ध में अर्जुन के सारथी बने । युद्ध में जब अर्जुन का  
 मोह हो गया तब उसे गीता का उपदेश दिया । जरासन्ध  
 को भीम के द्वारा मरवा दिया । अन्त में

एतेऽत्र समागताः ॥२१॥ योऽस्यमानानवेक्षेऽहं य

कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्पुंससमुद्यमे ॥२२॥





# ہرے کرشنا !

کرشنہ یتو یتو یتو ایسی کلین پوشہ لہ کر !  
 بانسری شہ دودو تو  
 دودونن شالہ کر  
 باغ نشاط گل پھولن - گوپین دل تہ شل برن  
 کرشنہ ! داتہ از مرز  
 شبہ منس موختہ مار کر  
 چانہ گیشیا مہ زہایہ نش صبح نگین تہ شہ پیو  
 سہ پیو کھس نبر کر تھ  
 حارتن کر دگار کر  
 باغ نپیمہ عطر زہاٹھ - سہ پیو ہوا پیہ وار کر ان  
 پوشہ پدین ترہ کتھ کری  
 توتہ ہمیس اما کر



پیاوردنیم بجز زلزلن چانه دیایه کن نظر !  
 کرشته دیاله یودنه یکھ  
 سونتہ پلن ہمار کر  
 نیچو نہ کر دلبری گلن یس نہ کر دلبری گھو !  
 درشنکو بہتر تر تمہن  
 پریمہ ہتی دل تیار کر  
 از تہ گنگاہ بہچو بہتر تر تمہن چانہ وہ میزد تار کر  
 کل مہر مس رس گلن  
 کیاہ یکے رم مہ تار کر  
 تار شکار سول بہ سول - ماننہ کیلس نہ گزند یون  
 وہ فی اگر لانکہ پیچہ تر کہ  
 بیون دل شرمسار کر  
 چانہ خیالہ کنو ونم - ساسبہ بدی دل پسند سوخن  
 فاضلن تار تر غزل  
 از پنن اشتہار کر

## हरै कृष्णा !

कृष्ण' यितो यितो यितो ! स्यकिल्यन पोशिजार कर  
 बांसुरी बाह दितो दितो ! द'दवनन शालमार कर  
 बागि निशांत गुल फौलन, गूपियन दिल त शिल ब्रमन  
 मेठि, दहान' कर सौखन, शबममस स्वस्त'हार कर  
 चानि ग्येशामि छाया तल. सुबहि निगीन ति शामि प्यव  
 सिरि मोखस नन्यर क'रिथ हा'रतन किरदगार कर  
 बागि नसीम' अंतरि छठ, आयि बेबायि वर करान  
 पोशि पद्यन च्य गथ करिय, तोति हम्यस अमार कर  
 प्यारवन्यन य'म्बर बलन, चानि पोत छाई कुन नजर  
 कृष्णा' दयाल 'यो'द न यिख, सोन्त' बलन व्यमार कर  
 यम्य न कर दिलबरी गुलन, यस न' क'र दिलबरी गुलव  
 दर्शनक्य बर मुचर तिमन, प्रेम' रस बागुजार कर  
 अज ति गंगायि ब'ध्य ब्रह्मन चानि' वो'भेजि तारि क्र'यं  
 कल मे' रुमस रुमस गनन, क्याह यिमय रुम मे' तार कर  
 तार' शिकारि स्वल ब स्वल हां'ज' ख्यलिस न अंद यिवन  
 वोन्य अगर लांकि प्यठ तरख म्योन दिल शर्मसार कर  
 चानि खयाल किन्य वनिम, सासबच शार दिलपसन्द  
 फाजिलुन ताजतर गजल, क्याह पनुन इश्तिहार कर



کمرشیں اچھو لکھم رنگ تہ بے رنگ پان گوم  
 بے رنگی منڑ چان پیریمک رنگ سنیوم  
 یہیمہ رنگ پیراوتھ گئے رنگ نظر آم  
 اتھو رنگس منڑ سریرہ پیراگاش دل سنیوم



Krishn Leela

کرشن لیلہ

कृष्ण लीला

ڈاکٹر نظام الدین - پروفیسر آف ہندی، اسلامیہ کالج، سرسنگر

کشمیر کے رسکھان

فاضل کاشمیری نے بالک اوستھا اور کرشن لیلہ نامی  
کرشن کاویہ کی تخلیق کر کے سور داس رسکھان پر مانتہ،  
نروتم داس، رتنا کر، سبیر مہینیم بھارتی کی روایت کو قائم  
رکھا ہے۔ اس کے ساتھ قومی یک جہتی کو بڑھاوا دینے میں ہم  
انہیں امیر خسرو، ظفر اکبر آبادی، ساغر نظامی، بیگل اتساہی

اور فیض بنارس وغیرہ کی روایت میں نمایاں پاتے ہیں۔ انہوں نے  
 سنگور و سری بابا گورو نانک کی بانی کا ترجمہ کر کے ایک عظیم  
 کارنامہ انجام دیا ہے جس کی سراسر کھ قوم نے کی ہے۔  
 فاضل کشمیری ایسے وسیع القلب شاعر ہیں جو تخیل کی  
 ہم آہنگی کے تاروں کو جھنکار عطا کرتے ہیں۔ وہ پُر خلوص  
 ماحول کے تخلیقی کام میں جُستے ہوئے ہیں۔ ان کے اشعار میں  
 بانسری کے میٹھے سُرخیلی ہم آہنگی کا پیغام دیتے ہیں۔ جو کوئی  
 اس سُر کو سنتا ہے جے جے ہری پکارتا ہے۔ اس کا دل پاک  
 ہو جاتا ہے، وہ بادشاہ ہو جاتا ہے۔ پھر اُس میں ہندو مسلمان  
 کی تمیز نہیں رہتی۔ فاضل صاحب کمرش جی کو گنگا کا ایسا پاؤں چل  
 (یہ لوترا پانی) تصور کرتے ہیں جو ہندو اور مسلمان کے دلوں کے  
 میل کو دھو ڈالتا ہے۔ کمرش کو پوشہ و ن گنگا یہ ہندو جبل  
 چھلان ہندوین مسلمانوں داک مل  
 فاضل صاحب کمرش کی بانسری پر مہرت ہیں۔ کیونکہ اس کا  
 سُرخیم آتما ہے۔ جلوہ روشنی حیات ہے اور ساز دلبری ہے



مری در کمرشن اس میں پھونک مار کر گیان و عرفان کے  
ظاہری و باطنی راز عیاں کرتا ہے جس سے اطراف عالم میں  
کیف و سرور چھا جاتا ہے جس سے نبی اور اوتار ایشور  
اللہ کے بھیجے ہوئے تسلیم کئے جاتے ہیں۔ اور رحمان و  
جھگوان ایک ہی ذات باری کے دو نام ہیں۔

فاضل صاب کمرشن کے رنگ و روپ پر مہر ت ہیں  
انہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ چھوڑوں میں رنگ و بو کمرشن کی  
بدولت ہے اور انہیں کے دم قدم سے یہ سنسار ایک حسین  
گلزار بنا ہوا ہے۔

فاضل صاب کی یہ کتاب "کمرشن لیل" بھارتیہ کمرشن کاویہ  
میں ایک گراف قدر اضافہ ہے اس سے قومی ایکتا پر اعتقاد  
رکھنے والوں کے دل و دماغ اور زیادہ روشن ہو جائیں گے۔

لحم المر

(DR. NIZAM-UD-DIN)

Prof. of Hindi

Islamia College, Srinagar

(Kashmir)

ترجمہ: پرتھوی ناتھ کول سیال کشمیری



*Dr. Jagat Mohani*

M. B., B. S.

King Edward Medical College, Lahore (Punjab Old)

MEDICAL SUPERINTENDENT

RATTAN RANI HOSPITAL 10 A. M.-4 P. M.

GYNAECOLOGIST & OBSTETRICIAN

## بھگوان کرشن نے

گیتا جی میں ارشاد فرمایا ہے :-

خاک، پانی، آگ، ہوا، خلا، مَن، ذہانت اور خودی۔  
ان آٹھ متضاد اقسام سے میری پُرکرتی بنی ہے۔ یہ میری  
اوتیہ اوستھا ہے۔ اوستھا کو بھی سمجھنے کی کوشش  
کرو۔ اس کے علاوہ میری اُتم اوستھا سویم ہی میں ہے۔  
جس پر ساری کائنات کا دار و مدار ہے۔ تم اس بات کو  
سمجھ لو، کہ تمام جاندار اور بے جان انہیں دُوسے بنے ہیں۔  
میں اس بدلتے سنسار کی ابتداء ہوں اور اختتام بھی۔

دکھنا پینہینے کے درمیان جو کہ آٹھویں کرشن پاکھش کے  
کالے پندرہ والے میں آتا ہے، جیل کی ایک کالی کوٹھری میں، جہاں  
موت کے کالے سائے سنڈلا رہے تھے، آدھی رات کے عالم میں  
ممبرک ساعت پر ایک سیاہ فام بچے، کرشن نے جنم لیا۔

گیتا جی کی بھاشا کی روشنی میں کرشن کے معنی "کالے" کے ہیں۔  
جس کی مناسبت کرشن پاکھش کے تاریک پندرہ وارے کے ساتھ  
ہے۔ یہ وہ ستمے تھا جب جلّت کے تمام رہنے والے لوگوں میں

نا سمجھی، جہالت اور پاپ کا دور دورہ تھا۔۔۔ اندھکار کے اس  
دور میں کرشن جیسے روشن ضمیر رہنے والے وجود کی تشذ ضرورت تھی  
جو اس رات میں ظہور میں آیا۔ اسی ذات نے کالے کر توت والے

منشوں کو روشنی بخش کر مکتی کا راستہ دکھایا۔ انہیں گیتا جی  
کے درس سے برہمانڈ کی اصلیت اور مایا کی مہیت سے واقف کیا  
جہاں ہری جو کرشن کے روپ میں اپنی بال اوستھا کے کھیل کود

جیسے مکھن چوری، گائے پالک، مری منوہر کھیلتا رہا۔ ان میں سے ہر



کرشن کے مڑی منوہر ہونے کو بڑی اہمیت حاصل ہے کیونکہ جب پیار



بھگوان کرشن جی مڑی بجاتے تھے تو اُس میں سے شانتی اور سکون کے  
لہر پید ہوتے تھے جن سے سُننے والوں پر محویت کا عالم چھا جاتا تھا۔  
کرشن جی سیکولر ازم کے اولین پرچارک تھے۔ انہوں نے لوگوں کو  
بھائی چارہ اور یکسانیت کا درس دیا اور سماج کے زیرِ پلے سانپوں اور





رہزئوں کو بھی قابو کر لیا اور اُن کا سدھار کیا ۔



کرشن جی دھرم کے محافظ سیاست دان اور ایک عظیم رتھ بان تھے۔  
 انہوں نے انسان کو دنیائی جھنجھٹوں سے آزاد کر دیا۔ وہ ہمہ دان اور  
 حق پرست تھے۔ وہ پاندروؤں کے دوست اور پشت پناہ تھے۔ انہوں  
 ظلم و تشدد، جلعساری اور دغا بازی جیسے شریر عناصر کو جڑ سے  
 اکھڑا۔ ان حقائق کا ذکر مشہور رزمیہ مہابھارت میں ملتا ہے۔

ہمارے فاضل صاحب ایک کرشن بھگت ہیں۔ رسالہ  
 ”دھرم یگ“ کے تنظیمی ادارہ نے انہیں ”کشمیر کا رسکھان“ کا  
 خطاب دیا ہے۔ کیونکہ انہوں نے رسکھان کی طرح کرشن بھگتی  
 کا بھرپور اظہار اپنے شہدوں میں ہمارے سامنے پیش  
 کیا ہے۔ انہوں نے کرشن کے بچپن، جوانی اور دیرینہ سالی  
 کے سندر مرقعے سجائے ہیں۔ ان کی کتاب ”کرشن لپا“  
 کی لپیلاؤں میں ترنم، تاثیر اور گداز ہے۔ ان کے اس  
 عظیم کام سے سوشل ازم اور قومی یکت کے میدان  
 میں اچھے نتائج برآمد ہوں گے۔

میری دعا ہے کہ یسودھیا کا بالک کرشن جو دائیں ہاتھ  
 میں حلوا، بائیں ہاتھ میں مکھن کا پیڑا نگلے میں زرق برق جواہر  
 کا ہار، شیر کے ناخنوں سے آراستہ بدن ہمارے فاضل صاحب کو  
 ابدی مسرت عطا کرے!

83-8-30  
 (ڈاکٹر جگت موہنی)

کشمیری غلام وادب اور قومی یکتا کے کار کو بڑھاوا دینے کے  
 سلسلہ میں فاضل کشمیری نے شری جی صاحب اور  
 سلوک مہلہ نواس اور ستھ رنگ کے بعد اس بار اپنی  
 کرشن لیلایوں کا یہ حسین گلدستہ بالک اوستھا عوام کے  
 بہبود کے لئے منظر عام پر لانے کی بار آور کوشش کی ہے،  
 جو واقعی ایک اہم کارنامہ ہے۔ مجھے اُمید ہے کہ اس  
 دلکش کتاب کی اشاعت سے قومی بھائی چارہ کی وسعت  
 میں دور رس نتائج برآمد ہوں گے۔

علی محمد لکھنؤ  
 علی محمد لکھنؤ

سرنگر کشمیر  
 ۱۹ نومبر ۱۹۸۳ء



PROF. CHAMANLAL SAPRU

180-Lalagar, P. O. Natipur  
Srinagar (Kashmir) 190 015

از : پروفیسر چمن لال سپرو

بھگوان شری کرشن نے اپنی لیلیاؤں سے سب کو یکساں طور پر  
اپنی طرف کشش کی ہے۔ اُن کا بابا کُروپ سُور داس اور رس خان  
جیسے عظیم شاعروں کے لئے پرستش کا موجب بن گیا ہے۔ ان دو  
شاعروں نے اپنے محبوب بھگوان کرشن سے متعلق وائسلیہ رس یعنی  
شفقتِ مادرِی کا جذبہ سے مملو نظموں کو تخلیق کر کے ہندی ادب  
کو امربنا دیا ہے۔

کشمیری زبان کے رس خان الحاج فاضل کشمیری ایک ایسی  
شخصیت ہیں جو حقیقی معنوں میں اُن تنگ حدود سے بالاتر ہیں جو  
آج کے انسان کو مذہب اور رنگ و نسل کے فرق میں جکڑے ہوئے  
ہیں فاضل صاحب موجودہ دور میں تمام مذہب کی بنیادی وحدت کو سمجھ کر

اپنی سُری زبان اور مخصوص پیرائے میں اس کا پرچار کرتے ہیں۔ وہ  
 پر مہنس رام کرشن مہاراج کے سرودھرم سمونے (Harmony of religions)  
 کو آج کے دور کے مسائل کا واحد حل تصور کرتے ہیں۔ وہ گیتا جی  
 مقدس انجیل، قرآن شریف اور سری گورو گرنہک صاحب میں ایک ہی  
 پیغام کی مختلف صورتیں دیکھتے ہیں۔

فاضل صاحب کو میں نے دھارمک محفلوں اپنی کرشن لیلیس  
 سناتے دیکھا ہے۔ وہ ایسی محفلوں میں اپنی شاعرانہ صلاحیتوں سے  
 ایک پُر کیف سماں باندھ دیتے ہیں۔ اُن کی زبان میں سلاست،  
 روانی اور تاثیر ہے۔ اُن کی شعری زبان ایسی سہل اور جاذبِ توجہ  
 ہے جسے پڑھنے والے اور سننے والے بغیر کسی کدو کاوش کے آسانی  
 سے سمجھ کر بھرپور حظ اُٹھاتے ہیں۔

اس بار فاضل صاحب نے بالک اوسنتھا کی کتابت و تزیین  
 اپنے من چاہے انداز میں خود کی ہے، جو اُن کا ہی حصہ ہے۔

یحیٰی لال سہرو

25.1.86

25-1-1984

६५। श्रीगणेशाय नमः । ॥ २ ॥

Fazil Kashmiri is, I have understood, unparalleled devotee of Lord Krishna. Although he is born muslim, but he is no longer now muslim in a strict theological sense, or Pandit. He is actually established in that state of divine devotion of Lord that has risen in that state where he has gone above limitation of caste creed and colour. He is just devotee of Lord Krishna. I hope this

अध्याय १६

श्रीभगवानुवाच ॥ अमयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थिति

॥१॥३॥ अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिर्यशः  
दमश्च यद्वैश्वदेवायस्तप आर्जवम् ॥१॥३॥



श्री भूतसर्गा लोकेऽसिन्दव आसुर एव च ।  
 देवो विस्तराः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥६॥

मा भुवः संपदं देवीमभिजातोऽसि पादव ॥

book 'Krishen Leela'  
 will illumine the  
 whole world.

I hope that each &  
 every human being  
 should and must own  
 this valuable book, so  
 that they also rise to  
 that state of divine  
 oneness where limita-  
 tion of caste and creed  
 are not recognised.

6-11-83. Lakshmanjoo  
 Guphtaganga

(شیو آچاریہ سوامی لکشمین جومہاراج - گیت گنگا سرینگر)  
 शेवाचार्या स्वामी लक्ष्मण जो महाराज

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च ।

अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥ देवी संपद्विमोक्षाय निबन्धयासुरी मता ।

فاضل کاشمیری ایک مذہب زدہ ذات نہیں ہیں۔ وہ

اپنے مذہبی عقائد کے دوش بدوش دوسرے دین و دھرم کے  
بانیوں اور پیروکاروں کی اقدار کا احترام کرتے ہیں جس کے  
امینہ میں ان کی انوارِ محمدی شری جو حب صابہ اور کرشن لیلہ  
جیسی گر انداز تصانیف پیش کی جاسکتی ہیں۔

زیرِ نظر ان کی تصنیف "کرشن لیلہ" ان کی کرشن بھگتی  
کی تصویر ہے۔ فاضل مصنف نے اس میں سری کرشن جی مہاراج  
پر سندر نظائیں لکھی ہیں۔ انہیں سنکر اور پڑھ کر سامعین  
اور قارئین روحانی کیف و گداز حاصل کرتے ہیں۔ میلادوں،  
خالصہ درباروں اور دہا التسوؤں میں حاضرین انہیں اپنا کام  
سنانے کی فرمائشیں کرتے ہیں اور ان کی قدر دانی کرتے ہیں۔  
فاضل صابہ کے ادبی مطبوعہ شہپاروں سے ہمارے  
دیس میں قومی یکتا اور بھائی چارہ کو قوت ملتی ہے۔

میلاد ام نجیون۔۔۔ گوجرانوالہ

۲۶ فروری ۱۹۸۴ء





*Symbol of Better Tomorrow*

Save a little for your

**FUTURE**

*in Various Deposit Schemes*

**of**

**Jammu & Kashmir Bank**

**Tailormade to Suit everybody's  
requirements**

**For details please step into  
any nearest Branch/Office  
of**

**Jammu & Kashmir Bank.**



कृष्ण-लीला

# Krishna Leela

*This Beautiful Book  
of the Personality of  
Krishna*

provides the key to how humanity can become united in  
peace, prosperity and friendship around a common cause.

SRI RAMAKRISHNA ASHRAMA  
LIBRARY. SRINAGAR.  
Accession No. 3639...  
Date ... ..

Printed at Hind Samachar Printing Press,  
Pacca Bagh, Jalandhar City.

















**KRISHNA LEELA**